Postal Reg. No.GDP -45/2017-2019

अल्लाह तआला का आदेश

وَاِذَا سَاَلَكَ عِبَادِیْ عَنِّیْ فَاِنِّیْ قَرِیْبٌ اُجِیْبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ اِذَا دَعَانِ فَلْیَسْتَجِیْبُوْا لِیْ وَلْیُؤْمِنُوْا بِیْ لَعَلَّهُمْ یَرْشُدُوْنَ ○

(सूरतुल बक़रा आयत :187)

अनुवाद: और जब मेरे बन्दे तेरे से मेरे बारे में सवाल करें तो निसन्देह मैं करीब हूं मैं दुआ करने वाले की दुआ का उत्तर देता हूं जब वह मुझे पुकारता है। अत: चाहिए कि वह मेरी बात पर लब्बैक कहें। और मुझ पर ईमान लाएं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّیْ عَلٰی رَسُوْلِهِ الْکَرِیْمِ وَعَلٰی عَبْدِهِ الْمَسِیْحِ الْمَوْعُوْد

وَلَقَدْ نَصَرَکُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ

वर्ष 3

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

The Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 21

मूल्य 500 रुपए वार्षिक

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

8 रमज़ान 1439 हिजरी कमरी 24 हिजरत 1397 हिजरी शमसी 24 मई 2018 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल;ल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़ज़ल नाज़िल करे। आमीन

सय्यदना हज़रत ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला ने फरमाया कि कश्ती नूह में हमारी शिक्षा का जो भाग है वह ज़रूर हर अहमदी को पढ़ना चाहिए बल्कि पूरी कश्ती नूह ही पढ़ें।

मुहम्मद रसूलुल्लाह के युग को छोड़ कर किसी युग में कभी किसी ने देखा कि हज़ारों भविष्यवाणियाँ की गईं और वे सब की सब प्रत्यक्ष रूप से पूरी हो गईं और हज़ारों लोगों ने उनके पूरा होने पर गवाही दी।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

मेरी कोई भविष्यवाणी ऐसी नहीं है जो पूरी नहीं हुई या उसके दो भागों में से एक पूरा नहीं हो चुका । यदि कोई खोजते-खोजते मर भी जाए तो ऐसी कोई भविष्यवाणी जो मेरे मुख से निकली हो उसे नहीं मिलेगी जिसके सन्दर्भ में वह कह सके कि ख़ाली गई । हाँ निर्लज्जता या अज्ञानता से कुछ भी कहे । मैं दावे से कहता हूँ कि मेरी हज़ारों खुली और स्पष्ट भविष्यवाणियाँ हैं जो बड़े प्रत्यक्ष रूप से पूरी हो गईं, लाखों मनुष्य जिनके साक्षी हैं । इसका उदाहरण यदि पहले नबियों में खोजा जाए तो हज़रत मुहम्मद साहिब के अतिरिक्त किसी और स्थान पर नहीं मिलेगा । यदि मेरे विरोधी इसी प्रकार से फ़ैसला करते तो बहुत पहले उनकी आंखें खुल जातीं । मैं उन्हें एक भारी इनाम देने को तैयार था, यदि वे संसार में कोई उदाहरण उन भविष्यवाणियों का प्रस्तुत कर सकते। केवल उद्दण्डता या अज्ञानता से यह कह देना कि अमुक भविष्यवाणी पूरी नहीं हुई। इस सन्दर्भ में हम इसके अतिरिक्त और क्या कहें कि ऐसी बातों को हठ धर्मी और मूर्खता समझें। यदि किसी जन-समूह में इसी खोज के लिए बात की जाती तो उनको अपनी बातों से लौटना पड़ता या निर्ल्लज कहलाते । हज़ारों भविष्यवाणियों का प्रत्यक्ष रूप से जैसा का तैसा पूर्ण हो जाना और उनके पूरा होने पर हज़ारों जीवित साक्षियों का पाया जाना यह कोई साधारण बात नहीं है, अपितु अल्लाह के दर्शन करा देना है। मुहम्मद रसूलुल्लाह के युग को छोड़ कर किसी युग में कभी किसी ने देखा कि हज़ारों भविष्यवाणियाँ की गईं और वे सब की सब प्रत्यक्ष रूप से पूरी हो गईं और हज़ारों लोगों ने उनके पूरा होने पर गवाही दी। मैं पूरे विश्वास से जानता हूँ कि जिस प्रकार अल्लाह निकट होकर इस युग में प्रकट हो रहा है और सैकड़ों परोक्ष (ग़ैब) के मामले अपने भक्त पर खोल रहा है । इस युग का उदाहरण पहले युगों में बहुत कम ही मिलेगा । लोग शीघ्र ही देख लेंगे कि इस युग में अल्लाह का चेहरा दिखाई देगा । यूँ प्रतीत होगा कि वह आकाश से उतरा है । उसने बहुत समय तक स्वयं को छुपाए रखा और नकारा गया और वह चुप रहा परन्तु वह अब नहीं छुपाएगा और दुनियां उसकी शक्ति के वह नमूने देखेगी कि कभी उनके बाप-दादों ने नहीं देखे थे । यह इस लिए होगा कि धरती बिगड़ गई, धरती और आकाश के पैदा करने वाले पर लोगों का विश्वास नहीं रहा । होठों पर तो उस का नाम है पर हृदय उस से फिरे हुए हैं । इसलिए उस ने कहा कि अब मैं नया आकाश और नई धरती बनाऊंगा । इसका अर्थ यही है कि धरती मर गई अर्थात मनुष्यों के हृदय कठोर हो गए अर्थात मर गए क्योंकि अल्लाह का चेहरा उनसे छुप गया और भूतकाल के दैवी निशान सर्वथा कहानियां बन गईं। अत: अल्लाह ने इरादा किया कि वह नई धरती और नया आकाश बनाए। नया आकाश क्या है और क्या है नई धरती ? नई धरती वे पवित्र हृदय हैं जिनको अल्लाह स्वयं अपने हाथ से तैयार कर रहा है, जो परमेश्वर से ज़ाहिर हुए और अल्लाह उनसे ज़ाहिर होगा । नया आकाश वह निशान हैं जो उसके भक्त के हाथ से उसी अल्लाह की आज्ञा से ज़ाहिर हो रहे हैं। परन्तु खेद है कि दुनियाँ ने अल्लाह की इस नवीनतम दैवी झलक से शत्रुता की। इनके पास कपोल-कल्पित गाथाओं के अतिरिक्त कुछ भी नहीं और उनका ख़ुदा उनकी अपनी ही कल्पनाएँ हैं। हृदय टेढ़े हैं, साहस टूटे हुए हैं, आंखों पर परदे हैं। अन्य क़ौमें तो स्वयं वास्तविक ख़ुदा को भुला बैठी हैं। उनका क्या स्मरण किया जाए जिन्होंने मनुष्य के बच्चों को ख़ुदा बना लिया। मुसलमानों की दशा देखो कि वे उससे कितने दूर हो गए हैं। सच्चाई के पक्के शत्रु हैं। सद्मार्ग के जानी दुश्मन की भांति विरोधी हैं। उदाहरणार्थ नदवतुल उलमा ने इस्लाम के लिए जो कुछ दावा किया है या अंजुमन हिमायते इस्लाम लाहौर जो इस्लाम के नाम पर मुसलमानों का माल लेती है । क्या ये इस्लाम के शुभ चिन्तक हैं ? क्या यह लोग सद्मार्ग के पक्षधर हैं? क्या इनको स्मरण है कि इस्लाम किन मुसीबतों के नीचे कुचला गया और पुन: जीवित करने के लिए अल्लाह का स्वभाव क्या है ? मैं सच-सच कहता हूँ कि यदि मैं न आया होता तो उनके इस्लामी समर्थन के दावे एक सीमा तक स्वीकार्य हो सकते, परन्तु अब ये लोग ख़ुदा के आरोप के नीचे हैं कि शुभचिन्तक होने का दावा करके जब आकाश से तारा निकला तो सबसे पहले विरोधी हो गए। अब ये उस ख़ुदा को क्या उत्तर देंगे जिसने उचित समय पर मुझे भेजा है परन्तु उन को कुछ परवाह नहीं। सूर्य दोपहर के निकट आ गया पर उनके विचार में रात है, ख़ुदा का झरना फूट पड़ा परन्तु अभी वे जंगल में विलाप कर रहे हैं, उसके आकाशीय ज्ञान का एक सागर ठाठे मार रहा है परन्तु इन लोगों को कोई ख़बर तक नहीं है, उसके निशान प्रकट हो रहे हैं परन्तु ये लोग सर्वथा लापरवाह हैं, न केवल लापरवाह अपितु ख़ुदा की धारा से शत्रुता रखते हैं। अत: यही इस्लाम की हिमायत, इस्लाम का प्रचार और इस्लाम की शिक्षा है जो इनके हाथों से हो रही है ? पर क्या ये लोग अपनी उपेक्षा से ख़ुदा के सच्चे इरादे को रोक देंगे, जिसकी प्रारंभ से सभी नबी साक्ष्य देते आए हैं ? नहीं बल्कि ख़ुदा की यह भविष्यवाणी निकट भविष्य में ही सत्य सिद्ध होने वाली है कि -

''कतबल्लाहो लअग़लिबन्ना अना व रुसुली''(अल्मुजादिलह 22)

ख़ुदा ने जैसा कि आज से दस वर्ष पूर्व अपने भक्त की सच्चाई सिद्ध करने के लिए आकाश पर रमज़ान में चन्द्र और सूर्य दोनों को ग्रहण लगाकर मेरे लिए साक्षी बनाया । ऐसा ही उसने नबियों की भविष्यवाणी के अनुसार धरती पर भी दो निशान प्रकट किए। एक वह निशान जिसको तुम क़ुर्आन शरीफ़ में पढ़ते हो- व इज़लइशारो उत्तिलत (अत्तकवीर 51)और हदीस में पढ़ते हो-''लयुतरकन्नल क़लासो फ़ला युसआ अलयहा'' जिसकी पुष्टि के लिए हिजाज़ की धरती अर्थात मदीना-मक्का के मार्ग में रेल भी तैयार हो रही है ।

(कश्ती नूह रूहानी ख़ज़ायन भाग 19 पृष्ठ 3)

☆ ☆ ☆

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

जलसा सालाना ब्रिटेन 2017 ई के अवसर पर सय्यदना हज़रत अमीरूल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ की व्यस्तता (भाग-6)

☆ हुज़ूर मैंने यहां आकर देखा है, आपकी गुणवत्ता और आदर्श काम दुनिया की सब जमाअतों से आगे है। मैंने सिएरा लियोन में दस साल बिताए हैं और इस साल वहां जलसा पर गया था। बहुत से लोगों से मिला। देश के राष्ट्रपति, मंत्री, संसद सदस्य और अन्य प्रमुख अधिकारी आए। आप ही सही रास्ते पर हैं और मुझे यकीन है कि ख़ुदा तआला आप के साथ है।

(तुर्कमेनिस्तान के एक मेहमान अब्दुर्रशीद साहिब)

हुज़ूर अनवर एक ऐसे व्यक्ति हैं जिनका चेहरा अल्लाह तआला के नूर से मुनव्वर और प्रकाशित है इस्लाम जिस एकता और भाईचारा की शिक्षा देता है वह केवल मुझे जमाअत अहमदिया में देखने को मिलती है। मुझे गर्व है कि मैं जमाअत अहमदिया का हिस्सा हूं और यह जमाअत पूरे विश्व में सुधार के लिए शिक्षा प्रस्तुत करती है और विभिन्न तरीकों से मानवता की मदद करती है। मुझे जलसा सालाना के दौरान इस्लाम और जमाअत के बारे में बहुत सारी चीज़ें सीखने को मिलीं।

(मैक्सिको की एक नई बैअत करने वाली महिला Rosalina Lara Flota साहिबा)

☆मैं जिस दिन से लंदन आया हूँ, स्नेह और प्यार से घिरा हुआ हूँ जैसे कि अपने वास्तविक माता-पिता और परिजनों के बीच हूं। जब हुज़ूर अनवर की तस्वीर देखी तो मुझे तभी विश्वास हो गया कि हुज़ूर अनवर एक ऐसे व्यक्ति हैं जिनका चेहरा अल्लाह तआला के नूर से मुनव्वर और प्रकाशमान है। जलसा सालाना में शामिल होकर मुझे यह बात समझ आ गई है कि मैंने अपना सारा जीवन अल्लाह तआला की तलाश में बिताया लेकिन अल्लाह तआला को सिर्फ यहाँ आकर ही पाया। धरती पर अब एक आशा की किरण पैदा हो गई है और लाखों लोगों की एक इस प्रकार की जमाअत पैदा हो गई है जो अपने आप में अद्वित्तीय है और यह जमाअत हर कर्म से प्रत्येक मुश्किल और कठिनाई को दुनिया से साफ करने के लिए तैयार है। (तुर्कमेनिस्तान के एक मेहमान अब्दुर्रशीद साहिब)

जलसा में सम्मिलित होने वाले सम्मानित सदस्यों के ईमान वर्धक विचार

दुनिया के विभिन्न देशों से जलसा में शामिल होने वाले प्रतिनिधियों की हज़रत अमीरूल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ से मुलाकातें।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ की इन दिनों में असामान्य व्यस्तता का संक्षिप्त उल्लेख

(रिपोर्टः अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादकः शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

मोरक्को के प्रतिनिधिमंडल की हुज़ूर अनवर के साथ मुलाकात

इस के बाद में मोरक्को के प्रतिनिधिमंडल ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज के साथ मुलाकात का सौभाग्य पाया। मोरक्को से सात लोगों का प्रतिनिधिमंडल था।

* वफद के सदस्यों ने कहा कि जलसा हमारे आध्यात्मिक परिवर्तन का कारण हुआ है। हम सभी हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज के भाषणों से बहुत प्रभावित हैं। जलसा की व्यवस्था बहुत अच्छी थी और हमारे आवास और अन्य जरूरतों का बहुत अच्छी तरह से ध्यान रखा गया था।

*एक युवक ने जो वहाँ एक सुरक्षा कंपनी में काम करते हैं, हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ की सेवा में अपनी पत्नी के लिए दुआ का अनुरोध किया कि वह अहमदी हो। उसने अभी तक बैअत नहीं की है। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: अल्लाह तआला फज़्ल फरमाए।

* मोरक्को के एक मित्र ने इस वर्ष जलसा सालाना के अवसर पर बैअत की थी। उन्होंने कहा कि मैंने बहुत समय पहले अहमदी था। लेकिन बैअत अब की है उस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: अहमदी आप दो दिन पहले हुए हैं जब आप ने बैअत की है, इस से पहले आप जमाअत की शिक्षा से सहमत थे।

* सदर मोरक्को ने जमाअत के लोगों का सलाम हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ को पहुंचाया और दुआ के लिए निवेदन किया।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज ने फरमाया: व अलैकुम अस्सलाम और फरमाया, अल्लाह तआला अपनी सुरक्षा में रखे।

मोरक्को के प्रतिनिधिमंडल की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज के साथ यह मुलाकात 11 बजकर 40 मिनट तक चली। अंत में, प्रतिनिधिमंडल के सदस्यों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज के साथ तस्वीर लेने का सौभाग्य प्राप्त किया ।

ग्वाटेमाला के वफद की हुज़ूर अनवर के साथ मुलाकात

इस के बाद प्रोग्राम के ग्वाटेमाला से आए जमाअत के प्रतिनिधिमंडल ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ के साथ मुलाकात की।

* ग्वाटेमाला से आने वाले मेहमान में जमाअत ग्वाटेमाला के जनरल सचिव डेविड गोंजालेज साहिब भी शामिल थे अल्लाह तआला की कृपा से इन के माध्यम के कई नेक लोगों को अहमदियत स्वीकार करने की तौफीक़ प्राप्त हुई। पिछले कुछ सालों में, जलसा सालाना ब्रिटेन में नियमित रूप से शामिल हो रहे हैं।

* एक मेहमान सुलैमान Rodriguez साहिब थे। यह अहमदी हैं उन्होंने पंद्रह साल पहले इस्लाम को स्वीकार किया था। इस के बाद दाऊद साहिब सचिव साहिब की तब्लीग़ से अहमदिया में जमाअत में दाख़िल हुए। अब यह बहुत उत्साही दाई इलल्लाह हैं और हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने उन्हें दौरान मुलाकात इरशाद फ़रमाया कि मुबल्लिग इन्चार्ज साहिब से धार्मिक शिक्षा प्राप्त कर के मुअल्लिम के रूप में काम करें।

* ग्वाटेमाला की सदर लजना Marta Maria साहिबा भी आई हुई थीं यह दूसरी बार जलसा सालाना में आई हुई थीं।

* ग्वाटेमाला के वफद में शामिल होने वाले अहमदी लोगों में एक अहमदी नई बैअत करने वाले Domingo Tul डोमिंगो तुल साहिब भी शामिल थे। गत वर्ष इन के माध्यम से ग्वाटेमाला में 100 से अधिक लोगों को जमाअत अहमदिया में शामिल होने की तौफीक मिली। महोदय सुप्रीम कोर्ट ग्वाटेमाला की तरफ से अपने ग्रामीण क्षेत्र के न्यायाधीश हैं।

* एक अहमदी दोस्त German Abuchery भी प्रतिनिधिमंडल में शामिल थे। उन का सम्बन्ध इंडोनेशिया से हैं। ग्वाटेमाला में 20 वर्षों से रह रहे हैं उन्हें ग्वाटेमाला में अहमदियत स्वीकार करने की तौफीक़ मिली उन की पत्नी ग्वाटे माला की हैं और तीन बच्चे हैं। सब अल्लाह तआला के फज़्ल से अहमदी हैं। यह पहली बार जलसा सालाना यू.के में शामिल हुए। जलसा के सारे प्रबन्ध आपसी भाईचारा मुहब्बत, जलसा में सेवा करने वाली की सेवाए, ज्ञान वर्धक तकरीरें विशेष

शेष पृष्ठ 8 पर

ख़ुत्ब: जुमअ:

ये तीन बातें ये हैं अर्थात् दावत इलल्लाह करना, नेक कर्म करना और इताअत और आज्ञाकारिता का नमूना दिखा कर यह घोषणा करना कि मैं अल्लाह और उस के रसूल की सारी बातों पर अनुकरण करने वाला या अनुकरण करने की यथा सम्भव कोशिश करने वाला हूं। ये बातें इस प्रकार की हैं जिन में से पहली बात एक मोमिन को धार्मिक ज्ञान सीखने और इसे दुनिया को सिखाने वाला बनाती है। जो यह सिखाती है कि दुनिया को बताओ कि अल्लाह तआला के हक क्या हैं और तुम ने उन्हें किस प्रकार अदा करना है। यह बताती है कि दूसरों को यह बताओ कि अल्लाह तआला ने तुम पर एक दूसरे कि क्या अधिकार रखे हैं और तुम ने उन्हें किस प्रकार अदा करना है। दूसरों को बताने की तरफ तभी ध्यान पैदा हो सकता है जब दूसरों को लिए दिल में एक दर्द हो। उन को शैतान के फंदे और कब्ज़ा से बचाने के लिए एक तड़प हो और ध्यान हो। अल्लाह के बन्दों के गिरोह को बढ़ाने के लिए एक तड़प हो। जिस में यह विशेषता पैदा हो जाए या अल्लाह तआला के निकट लाने के लिए एक भावना और शौक हो विशेष रूप से इस अवस्था में कि जब कि शैतान के षडयन्त्र और अल्लाह तआला से दूर करने के माध्यम अपनी चरम सीमा को पहुंच चुके हैं। इस अवस्था में अल्लाह तआला का भय रखने वाला और उस की निकटता को तलाश करने वाला ही यह कोशिश और संघर्ष कर सकता है।

फिर दूसरी विशेषता यह है कि फरमाया कि नेक कर्म करो अर्थात अल्लाह तआला और उसके बन्दों के हक़ अदा करने की तरफ न केवल ध्यान दो बल्कि खुद एक मिसाल बन कर अपना नमूना दूसरों के लिए स्थापित करो वरना अगर अनुकरण नहीं है तो तुम्हारा धार्मिक ज्ञान भी व्यर्थ है और अल्लाह तआला की ओर बुलाने का कार्य भी लाभ रहित है और अल्लाह तआला की बरकतों और बेहतर परिणामों से खाली होगा।

फिर तीसरी विशेषता यह वर्णन की कि वास्तविक मोमिन यह घोषणा करे कि मैं पूर्ण आज्ञा पालन करने वालों में से हूँ अर्थात अल्लाह तआला और उसके रसूल के आदेश पर पूर्ण विश्वास करता हूँ और न केवल विश्वास करता हूँ बल्कि उन्हें अपने जीवन का हिस्सा बनाता हूँ। मैं दुनिया धर्म को दुनिया पर प्राथमिकता करने वाल हूं। आज्ञाकारिता में, समय के ख़लीफा और जमाअत के निज़ाम की व्यवस्था की आज्ञाकारिता और आज्ञा पालन भी आ जाती है।

अच्छे कर्म और नेक कर्म और तक्वा की गुणवत्ता भी तभी प्राप्त होती है जब आज्ञाकारिता और आज्ञापालन के मानकों में भी उच्च होगा। कभी-कभी ज़ाहिर में नेक लोग होते हैं या धर्म का काम करने वाले इस प्रकार के लोग होते हैं जिन का अन्त नज़र आता है कि अच्छा नहीं हुआ।

हमारी तब्लीग़ तभी सफल होगी और हमारे नेकियाँ तभी नेकियां कहलाएंगी जब हम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के बाद ख़िलाफत की प्रणाली की भी पूरी आज्ञा पालन करने वाले होंगे और ख़िलाफत के अन्तर्गत जो प्रणाली है उस से भी सहयोग करने वाले होंगे। हमारी व्यक्तिगत और सामूहिक प्रयासों में तभी बरकत पड़ेगी जब जमाअत का हर सदस्य और हर उहदेदार भी, प्रत्येक कर्मचारी और प्रत्येक मुरब्बी भी प्रणाली को समझने और एक-दूसरे का हक अदा करने वाला होगा।

इसमें तो कोई शक नहीं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम द्वारा इस्लाम का सुंदर संदेश दुनिया में फैलना है और फैल रहा है। इस के बार में अल्लाह तआला ने आपको कई इल्हामों के माध्यम से ख़ुशखबर दी है।

अब हम देखते हैं कि एम टी ए के माध्यम से अल्लाह तआला दुनिया में स्वंय पैग़ाम पंहुचा रहा है।

ये तो अल्लाह तआला के काम और उसके वादे हैं। ये तो पूरे होते रहेंगे इंशा अल्लाह। इस में हमारा या किसी भी मानवीय प्रयास का कमाल नहीं है, बल्कि अल्लाह तआला फरमाता है कि सर्वश्रेष्ठ मोमिन की निशानी यह है कि वह अल्लाह तआला की तरफ बुलाए। अतः अल्लाह तआला हमें इस काम में हिस्सा दार बनाना चाहता है जो काम वह ख़ुद कर रहा है, जिसे उसने करने का फैसला किया है। हमें तो अल्लाह तआला इनाम में शामिल करना चाहता है। इसलिए, इस बात को प्रत्येक अहमदी को महत्त्व देना चाहिए।

स्पेन की जमाअत के लोगों को विशेष रूप से अल्लाह तआला की तरफ बुलाने की नसीहत और इस बारे में प्रमुख हिदायतें तब्लीग़ और दावत इलल्लाह के बारे में आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हदीसों और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के उपदेशों का वर्णन।

ख़ुत्ब: जुमअ: सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रेहिल अज़ीज़, दिनांक 20 अप्रैल 2018 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, बिशारत पेदरोबाद, स्पेन।

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔
اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ إِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

وَ مَنْ اَحْسَنُ قَوْلًا مِّمَّنْ دَعَآ اِلَى اللّٰهِ وَ عَمِلَ صَالِحًا وَّ قَالَ اِنَّنِيْ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ

(हाम मीम सिज्दा 34)

इस आयत का अनुवाद यह है कि और बात कहने में उससे बेहतर कौन हो सकता है जो अल्लाह तआला की तरफ बुलाता है और अच्छे कर्म करता है और कहे कि मैं वास्तव में पूर्ण आज्ञाकारियों में से हूं।

यह आयत एक पूर्ण आदर्श है और सभी विशेषताओं को समेटे हुए है, जो एक मोमिन में होनी चाहिए। एक वास्तविक मुसलमान से अधिक और कौन इन बातों को करने वाला हो सकता है? अल्लाह तआला ने ये तीन बातें या तीन विशेषताओं का वर्णन किया है, यदि किसी में हों तो उस की ज़िन्दगी में क्रांति पैदा कर सकती हैं, न केवल उस के जीवन में क्रांतिकारी बदलाव कर सकती हैं बल्कि इस प्रकार का आदमी समाज में भी परिवर्तन करने वाला बन सकता है। ये तीन बातें ये हैं अर्थात् दावत इलल्लाह करना, नेक कर्म करना और इताअत और आज्ञाकारिता का नमूना दिखा कर यह घोषणा करना कि मैं अल्लाह और उस के रसूल की सारी बातों पर अनुकरण करने वाला या अनुकरण करने की यथा सम्भव कोशिश करने वाला हूं।

ये बातें इस प्रकार की हैं जिन में से पहली बात एक मोमिन को धार्मिक ज्ञान

सीखने और इसे दुनिया को सिखाने वाला बनाती है। जो यह सिखाती है कि दुनिया को बताओ कि अल्लाह तआला के हक क्या हैं और तुम ने उन्हें किस प्रकार अदा करना है। यह बताती है कि दूसरों को यह बताओ कि अल्लाह तआला ने तुम पर एक दूसरे कि क्या अधिकार रखे हैं और तुम ने उन्हें किस प्रकार अदा करना है। दूसरों को बताने की तरफ तभी ध्यान पैदा हो सकता है जब दूसरों को लिए दिल में एक दर्द हो। उन को शैतान के फंदे और कब्ज़ा से बचाने के लिए एक तड़प हो और ध्यान हो। अल्लाह के बन्दों के गिरोह को बढ़ाने के लिए एक तड़प हो। जिस में यह विशेषता पैदा हो जाए या अल्लाह तआला के निकट लाने के लिए एक भावना और शौक हो विशेष रूप से इस अवस्था में कि जब कि शैतान के षडयन्त्र और अल्लाह तआला से दूर करने के माध्यम अपनी चरम सीमा को पहुंच चुके हैं। इस अवस्था में अल्लाह तआला का भय रखने वाला और उस की निकटता को तलाश करने वाला ही यह कोशिश और संघर्ष कर सकता है।

फिर दूसरी विशेषता यह है कि फरमाया कि नेक कर्म करो अर्थात अल्लाह तआला और उसके बन्दों के हक़ अदा करने की तरफ न केवल ध्यान दो बल्कि खुद एक मिसाल बन कर अपना नमूना दूसरों के लिए स्थापित करो वरना अगर अनुकरण नहीं है तो तुम्हारा धार्मिक ज्ञान भी व्यर्थ है और अल्लाह तआला की ओर बुलाने का कार्य भी लाभ रहित है और अल्लाह तआला की बरकतों और बेहतर परिणामों से खाली होगा। जब यह स्थिति हो तो अल्लाह तआला की तरफ बुलाने के सारे प्रयास बेकार हो गई। और अल्लाह तआला की प्रसन्नता भी फिर प्राप्त न हुई।

और फिर तीसरी विशेषता यह वर्णन की कि वास्तविक मोमिन यह घोषणा करे कि मैं पूर्ण आज्ञा पालन करने वालों में से हूँ अर्थात अल्लाह तआला और उसके रसूल के आदेश पर पूर्ण विश्वास करता हूँ और न केवल विश्वास करता हूँ बल्कि उन्हें अपने जीवन का हिस्सा बनाता हूँ। मैं दुनिया धर्म को दुनिया पर प्राथमिकता करने वाल हूं। आज्ञाकारिता में, समय के ख़लीफा और जमाअत के निज़ाम की व्यवस्था की आज्ञाकारिता और आज्ञा पालन भी आ जाती है। यह कहना कि मैं बहुत तब्लीग़ कर रहा हूं कि मेरे पास बहुत अधिक ज्ञान है कि मुझे किसी भी प्रणाली की आवश्यकता नहीं है। यह तरीका अल्लाह तआला को पसन्द नहीं है। इस ज़माना में अल्लाह तआला एक जमाअत स्थापित करना चाहता है और उस ने कर दी। अत: उस के साथ जुड़ना ज़रूरी है। अल्लाह तआला ने फरमा दिया कि नि:सन्देह अल्लाह की तरफ बुलाना बहुत अच्छी बात है परन्तु यह घोषणा भी बहुत ज़रूरी है कि اِنَّنِيۡ مِنَ الۡمُسۡلِمِيۡنَ मैं आज्ञा पालन के उच्च स्तर स्थापित करते हुए आज्ञापालन की भी घोषणा करता हूं।

इसी प्रकार, अच्छे कर्म और नेक कर्म और तक्वा की गुणवत्ता भी तभी प्राप्त होती है जब आज्ञाकारिता और आज्ञापालन के मानकों में भी उच्च होगा। कभी-कभी ज़ाहिर में नेक लोग होते हैं या धर्म का काम करने वाले इस प्रकार के लोग होते हैं जिन का अन्त नज़र आता है कि अच्छा नहीं हुआ।

अत: अल्लाह तआला फरमाता है कि एक मोमिन को एक अच्छी बात कहने वाले को भी उच्च नमूने दिखाने वाले की गुणवत्ता तब प्राप्त होगी और परिणाम प्राप्त होंगे जब वे यह घोषणा भी करे कि मैं आज्ञाकारी होता हूँ। मैं अल्लाह तआला की बनाई हुई प्रणाली का पूर्ण अनुपालन और आज्ञाकारिता करता हूँ। और हम अहमदियों के लिए यह गुणवत्ता जो पूर्ण अनुपालन के हैं तभी स्थापित होंगे, हमारी तब्लीग़ तभी सफल होगी और हमारे नेकियाँ तभी नेकियां कहलाऐंगी जब हम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के बाद ख़िलाफत की प्रणाली की भी पूरी आज्ञा पालन करने वाले होंगे और ख़िलाफत के अन्तर्गत जो प्रणाली है उस से भी सहयोग करने वाले होंगे। हमारी व्यक्तिगत और सामूहिक प्रयासों में तभी बरकत पड़ेगी जब जमाअत का हर सदस्य और हर उहदेदार भी, प्रत्येक कर्मचारी और प्रत्येक मुरब्बी भी प्रणाली को समझने और एक-दूसरे का हक अदा करने वाला होगा।

इसमें तो कोई शक नहीं कि अल्लाह तआला ने अपने वादे के अनुसार और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणी के अनुसार जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को भेजा है और उन वादों के अनुसार भेजा है कि जिन कार्यों को पूरा करना आप को सौंपा है वे इन्शा अल्लाह पूरे होंगे। कुछ तो आपके जीवन में पूरे हुए और कुछ आपके जीवन के बाद पूरे होने थे और हो रहे हैं, और आप के माध्यम से इस्लाम का संदेश भी दुनिया के कोने कोने में पहुंच रहा है, और धीरे-धीरे पवित्र दिल लोग अहमदियत और इस्लाम की छाया में आ रहे हैं। अल्लाह तआला अपने नबियों को जिन उद्देश्यों के लिए भेजता है उन को पूरा करता है।

अल्लाह तआला क़ुरआन करीम में फरमाता है

كَتَبَ اللّٰهُ لَاَغۡلِبَنَّ اَنَا وَ رُسُلِيۡ (अल्मुजादिल: 22) कि अल्लाह तआला ने यह फैसला कर दिया है कि मैं और मेरा रसूल विजयी होंगे। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को भी कई बार यह इल्हाम हुआ। अल्लाह तआला ने आप को भी इल्हाम फरमाया।

(तज़्किर: पृष्ठ 84 प्रकाशन चतुर्थ)

हज़रत मौऊद अलैहिस्सलाम इस आयत की व्याख्या करते हुए एक जगह फरमाते हैं कि

"यह ख़ुदा तआला की सुन्नत है और जब से उसने मनुष्य को पृथ्वी में पैदा किया है हमेशा इस सुन्नत को प्रकट करता रहा है कि वह अपने नबियों और रसूलों की मदद करता है और उन्हें विजय देता है जैसा कि वह फरमाता है कि كَتَبَ اللّٰهُ لَاَغۡلِبَنَّ اَنَا وَ رُسُلِيۡ (अल्मुजादिल: 22)और प्रभुत्व से मतलब यह है कि जैसा कि रसूलों और नबियों की यह इच्छा होती है कि ख़ुदा की हुज्जत पृथ्वी पर पूरी हो जाए और उसका मुकाबला कोई न कर सके इसी तरह सर्वशक्तिमान ख़ुदा तआला शक्तिशाली निशानों के साथ उस की सच्चाई प्रकट कर देता है और जिस सच्चाई को वे दुनिया में फैलाना चाहते हैं, उस का बीज बोना उन्हीं के हाथों से कर देता है।

(अलवसिय्यत रूहानी ख़ज़ायन भाग 20 पृष्ठ 304)

फिर आप फरमाते हैं कि

"ख़ुदा तआला ने आरम्भ से लिख छोड़ा है और अपना कानून और अपनी सुन्नत बताया है कि कि वह और उस के रसूल हमेशा विजयी होंगे।" हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अपने बारे में फरमाते हैं कि "चूंकि मैं उस का रसूल अर्थात नबी हूं परन्तु बिना किसी नई शरीयत और नए नाम के बल्कि उसी नबी करीम ख़ातमुल औलिया सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का नाम पाकर और उसी में होकर और उसी का द्योतक बनकर आया हूँ इसलिए मैं कहता हूं कि जैसा कि प्राचीन काल से आदम के ज़माने से लेकर आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तक हमेशा अर्थ इस आयत का सच्चा निकलता आया है ऐसा ही अब भी मेरे पक्ष में सच्चा निकलेगा।"

(नुज़ूलुल मसीह रूहानी ख़ज़ायन भाग 18 पृष्ठ 380)

अत: जिस पौधा को अल्लाह तआला हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के द्वारा दुनिया के प्रत्येक कोने में लगाना चाहता है वह आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर उतरी हुई शरीयत का पौधा है जिस की पूर्णता हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माना में मुकद्दर थी। अत: जिस तरह कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम ने फरमाया कि जिस सच्चाई को अल्लाह तआला दुनिया में फैलाना चाहता है उस का बीज रोपण अपने रसूलों के हाथ में करवा देता है और यह इस्लाम की पूर्णता का बीज अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम के द्वारा लगवा दिया बल्कि इस बीज की कुछ इलाकों में हरी भरी फसलें भी आप को दिखा दीं। और फिर ख़िलाफत के निज़ाम के माध्यम से आप के लगाए हुए बीज के पौधे दुनिया में फैल रहे हैं। मानो वह बीज जो आप के हाथों से अल्लाह तआला ने लगवाया था इसके पौधे दुनिया के अन्य देशों में भी फैल रहे हैं जैसे ज़मींदार जानते हैं और यहाँ भी ज़मींदारी का बड़ा रिवाज है कि पौधों की नर्सरी तैयार करके फिर उनके पौधों को कहीं भी ले जाया जा सकता है और वहाँ लगाया जा सकता है इसी तरह आप के क़ुरआन के ज्ञान, अनुभूति और तफ्सीर की नर्सरी और जिस प्रकार आप ने हमें इस्लाम का संदेश क़ुरआन की रोशनी स्पष्ट कर के बताया दुनिया के कोने कोने में फैलाया जा रहा है और दुनिया इस्लाम की सुंदर शिक्षा को स्वीकार कर रही है।

अत: इसमें तो कोई शक नहीं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के द्वारा इस्लाम का सुंदर संदेश दुनिया में फैलना है और फैल रहा है। इस के बार में अल्लाह तआला ने आपको कई इल्हामों के माध्यम से ख़ुश-खबरी दी है। ऊपर वर्णित इल्हामों में से एक तो كَتَبَ اللّٰهُ لَاَغۡلِبَنَّ اَنَا وَ رُسُلِيۡ का वर्णन हो चुका है। इसके अतिरिक्त भी कई इल्हाम हैं जैसे कुछ वर्णन करता हूं फरमाया

يَنۡصُرُكُمُ اللّٰهُ فِيۡ دِيۡنِهٖ (तज़्किर: पृष्ठ 574 प्रकाशन चतुर्थ)

अल्लाह तआला आपके धर्म में आपकी मदद करेगा। अर्थात जिस काम को आप फैला रहे हैं वह अल्लाह तआला का धर्म है, वह इस्लाम है। फिर एक इल्हाम है कि

يَنۡصُرُكَ اللّٰهُ مِنۡ عِنۡدِهٖ (तज़्किर: पृष्ठ 39 प्रकाशन चतुर्थ)

ख़ुदा अपनी तरफ से तेरी सहायता करेगा। एक इल्हाम है कि "मैं तुझे पृथ्वी के किनारों तक सम्मान दूंगा।"(तज़्किर: पृष्ठ 149 प्रकाशन चतुर्थ) हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का सम्मान स्थापित होगा और इस्लाम का संदेश पहुंचाने के

कारण स्थापित होगा और अल्लाह तआला द्वारा स्थापित होगा। फिर यह इल्हाम है जो बहुत प्रसिद्ध है और प्रत्येक स्थान पर कहा जाता है इस का वर्णन करना चाहता हूं कि "मैं तेरी तब्लीग़ को पृथ्वी के किनारों तक पुहंचाऊंगा।"(तज़्किर: पृष्ठ 260 प्रकाशन चतुर्थ) हर कोई जानता है कि हर कोई कहता है। अत: इसमें तो कोई शक नहीं कि आपका संदेश दुनिया में पहुँचना है और दुनिया आप को आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सच्चे आशिक और एक बहादुर पहलवान की स्थिति में जानेगी और जान रही है।

अब हम देखते हैं कि एम.टी ए के माध्यम से अल्लाह तआला दुनिया में आप का संदेश पहुंचा रहा है। मैं पहले भी कई बार कह चुका हूं कि हमारे सांसारिक संसाधन कभी भी इस बात के योग्य नहीं हो सकते थे या कम से कम अब तक इस बात को बर्दाश्त नहीं कर सकते हैं कि हम टीवी चैनल चलाएं। चौबीस घंटे चलाएं और दुनिया की विभिन्न भाषाओं में प्रोग्राम दें और दुनिया के हर क्षेत्र में इस के कार्यक्रम पहुंच रहे हों और दुनिया के जो विभिन्न क्षेत्र हैं उन में हर क्षेत्र में मेरे ख़ुत्बों के अनुवाद पहुंच रहे हों। छ: सात भाषाओं में साथ साथ अनुवाद भी हो रहा हो। यह सब अल्लाह तआला के हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से किए गए वादों का परिणाम है और फिर उसके परिणाम स्वरूप अर्थात मेरे ख़ुत्बों के द्वारा और कार्यक्रमों के द्वारा और एम.टी.ए के विभिन्न कार्यक्रमों के द्वारा सईद प्रकृति लोग अहमदियत में शामिल हो रहे हैं।

मुझे कई लोग लिखते हैं कि कैसे एम.टी ए पर आप के ख़ुत्बों या दूसरे कार्यक्रमों ने हम पर असर डाला और हम ने अहमदियत में रुचि ली और अल्लाह तआला ने अहमदियत स्वीकार करने की तौफ़ीक़ दी। दो दिन हुएGuadelope के मुरब्बी के साथ वहां के एक नए अहमदी का एक कार्यक्रम आ रहा था। उन्होंने कहा कि अहमदियत का परिचय तो मुझे हो गया लेकिन बैअत नहीं कर रहा था और ख़ुत्बे सुनने के बाद फिर तसल्ली हुई और उन के द्वारा फिर मुझे बैअत की भी तहरीक पैदा हुई। ये तो अल्लाह तआला के काम और उसके वादे हैं। ये तो पूरे होते रहेंगे इंशा अल्लाह। इस में हमारा या किसी भी मानवीय प्रयास का कमाल नहीं है, बल्कि अल्लाह तआला फरमाता है कि सर्वश्रेष्ठ मोमिन की निशानी यह है कि वह अल्लाह तआला की तरफ बुलाए। अत: अल्लाह तआला हमें इस काम में हिस्सा दार बनाना चाहता है जो काम वह ख़ुद कर रहा है, जिसे उसने करने का फैसला किया है। हमें तो अल्लाह तआला इनाम में शामिल करना चाहता है। इसलिए, इस बात को प्रत्येक अहमदी को महत्त्व देना चाहिए कि जो काम अल्लाह तआला ने अपने ज़िम्मे लिया हुआ है उस में भागीदार बन कर इनाम में हिस्सा लें अल्लाह तआला की प्रसन्नता प्राप्त करने वाले बनें।

अत: आप लोग जो यहां स्पेने में हैं समय निकाल कर सप्ताह में कम से कम एक दो दिन तब्लीग़ के लिए दें। यहां के लोगों की तबीयत के अनुसार तब्लीग़ के नए से नए मार्ग तलाश करने की कोशिश करें। एक नए अहमदी स्पेनिश हैं दो तीन दिन हुए मुझे मिलने के लिए आए कहने लगे कि जिस तरह हमें इस्लाम की तब्लीग़ करनी चाहिए नहीं कर रहे जमाअत नहीं कर रही। बल्कि उन के विचार में एक दो मुबल्लिग़ को छोड़ कर स्पेनिश मिज़ाज को देखते हुए तब्लीग़ नहीं कर रहे हैं या उन को पता नहीं कि किस प्रकार तब्लीग़ करनी चाहिए। उन्होंने कहा कि हम बेशक यूरोप में शामिल होते हैं परन्तु हमारी सोच यूरोप से अलग है। यूरोप के लोगों की तरह आज कल के हालात के कारण यहां भी लोग इस्लाम और मुसलमानों से भयभीत हैं। यूरोप का प्रभाव है परन्तु साथ ही मुसलमानों के साथ एक लम्बा समय रहने के कारण हमारे अन्दर अपने आप मुसलमानों से एक सम्बन्ध का भाव है जिसे उभारने की ज़रूरत है। विशेष कर के कुछ प्रान्तों में जैसे उनदुलस का सूबा है।

अत: हमारे सैक्रेटरी तब्लीग़ केन्द्रीय भी और जमाअतों के सैक्रेटरी तब्लीग़ को और दूसरे उहदेदार भी जहां हालात के अनुसार योजना बनाएं वहां हर अहमदी को भी ख़ुद्दाम, अंसार, लजना को भी तब्लीग़ के लिए समय देना चाहिए। यहां मुसलमानों को सात आठ सौ साल पहले तलवार के ज़ोर पर ईसाई बनाया गया परन्तु हम ने मुहब्बत और प्यार से इस्लाम की सुन्दर शिक्षा के द्वारा लोगों के दिलों को जीतना है। जमाअत का परिचय और इस्लाम का परिचय तो यहां के लोगों को अब बहुत व्यापक रूप से हो रहा है। टीवी चैनल और समाचार पत्र जमाअत के बारे में लिखते हैं और इस माध्यम से तब्लीग़ भी हो रही है। कुरतबा के एक समाचार पत्र के संपादक या शायद मालिक मेरे पास आए थे। उन्होंने समाचार पत्र दिखाया कि किस प्रकार मैं जमाअत के बारे में लिखता हूं और पूरा पृष्ठ लिखा हुआ है। लंदन में जब हमारी शान्ति संगोष्ठी हुई है वहां भी यहां के समाचार पत्र और टीवी चैनल के प्रतिनिधि आए हुए थे। टीवी चैनल के प्रतिनिधि ने भी मुझ से साक्षात्कार लिया और फिर यहां आ कर अपने टीवी चैनल पर जमाअत के बारे में और जमाअत इस्लाम की जो शान्ति की शिक्षा प्रस्तुत करती है इस के बारे में एक प्रोग्राम दिखाया। मेरे साक्षात्कार का कुछ हिस्सा भी इसमें दिखाया। तो अब स्पेन की ऐसी स्थिति नहीं है जो चालीस साल पहले थी।

आज, अगर संदेश पहुंचाने में कमी है तो यह हमारी तरफ से है। फिर यहां विभिन्न शहरों में, मोरक्को और अन्य अरब देशों के लोग बसे हैं और उन के इलाकों में अरबी बोलने वालों के द्वारा तब्लीग़ की जाए। अरबी में साहित्य बांटा जाए। स्पेनिश भाषा में साहित्य का जहां तक संबंध है और इस्लाम और अहमदियत के परिचय पर आधारित साहित्य का जहां तक संबंध है पिछले कुछ वर्षों से मैं यू.के और जर्मनी के स्नातक छात्रों को जो शाहिद करके कर्म क्षेत्र में आने वाले हैं कर्म क्षेत्र में भेजने से पहले उन्हें यहाँ भेजता हूँ और वह हर शहर में यह साहित्य वितरित करते हैं मेरे विचार में शायद तीन लाख से अधिक की संख्या में साहित्य वितरण हो चुका होगा। नए मुरब्बियान और जामिया के वे लड़के जो यहां आते हैं उन की सामान्य धारणा यही है कि स्पेन के लोग बहुत बेहतर तरीके से साहित्य प्राप्त करते हैं और आम तौर पर सम्मान के साथ मिलते हैं और पढ़ते हैं। बहुत कम हैं जो फैंकते हैं। आम तौर पर देखते हैं और फिर जेब में डाल लेते हैं।

इसी तरह हमारी एक सेपेनिश महिला हैं जो अहमदी हुई हैं लंदन में रहती हैं वहाँ हमारे सैक्रेटरी नौ मुबाई की पत्नी हैं उनका परिवार यहीं है। माता-पिता यहीं हैं। यहां आती हैं, विभिन्न स्कूलों या कॉलेजों में यूनीवर्सिटियों, में जाकर तब्लीग़ करती हैं और अवसर तलाश करती है। लंदन से आ कर किस प्रकार जमाअत का परिचय करवाना है और इस्लाम का सन्देश पहुंचाना है तो यहां जो रहने वाले हैं मुरब्बी हैं वे क्यों नहीं इस प्रकार के अवसर पैदा कर सकते। इसलिए, यहां रहने वाले अहमदी उहदेदारों को मुरब्बियों को इस बारे में एक मजबूत और एकीकृत कार्यक्रम बनाना चाहिए। नए अहमदी स्पेनिश जिन का मैंने अभी वर्णन किया है उन को भी मैंने यही कहा था कि तुम्हारे विचार में जो तब्लीग़ के बेहतरीन तरीके हो सकते हैं वे मुझे लिख कर भिजवाएं। उन का परामर्श जब आएगा तो मैं आप को भिजवा दूंगा और अगर वह अनुकरण योग्य है और आप लोगों को समझ आती है तो उस के अनुसार फिर अनुकरण होना चाहिए परन्तु असल चीज़ यही है कि आपस में सहयोग की ज़रूरत है। निजी हितों से हट कर जमाअत के हित को प्राथमिकता देने की आवश्यकता है। इस बात को समझने की ज़रूरत है कि हम ने अहमदी होकर अपनी ज़िम्मेदारियों को अदा करना है और एक विशेष उत्साह और लगन से अदा करना है। केवल साल के बाद नए मुरब्बियान के यहाँ महीने के लिए आ कर साहित्य वितरित करने से उद्देश्य प्राप्त नहीं होगा। मैंने उन लोगों को इस लिए भिजवाना शुरु किया था कि एक तो आप की मदद हो जाएगी क्योंकि यहां जमाअत के लोगों की कम संख्या है, दूसरे इस तरह आप के आपके दिल में तब्लीग़ का शौक होगा या भाषा सही न आने से जो कम से कम तब्लीग़ करने में जो शर्म है वह दूर होगी और सभी तब्लीग़ के काम में शामिल हो जांएगे। मुरब्बयी जो यहां आते हैं उन्हें तो भाषा नहीं आती हैं, लेकिन फिर भी हर जगह जाते हैं और अपना लक्ष्य पूरा करते हैं।

इसलिए यह अनुभव पैदा करने की ज़रूरत है कि अल्लाह तआला ने अल्लाह तआला की तरफ बुलाने का काम जो एक सच्चे मोमिन को सौंपा गया है उस हम ने भी पूरा करना है। एक तड़प और जोश से इस में भाग लेना है और इस काम में सब से अधिक मुरब्बियों का कर्तव्य है कि पहले वे तब्लीग़ के मार्ग तलाश करें लोगों को बताएं और जमाअत के लोगों को साथ लेकर चलें। जो नेशनल तब्लीग़ सैक्रेटरी हैं तब्लीग़ के बारे में बहुत भावना को प्रकट करते रहते हैं। उन्होंने मुझे खुल कर तो नहीं कहा परन्तु लगता है कि उन्हें बजट का मसला है। जमाअत के लोगों के सहयोग का मस्ला है। इसलिए यह अमीर जमाअत का भी कर्तव्य है कि अगर बजट का मस्ला है तो हल करें मुझे लिखें। पहले भी तो बहुत सारे मस्ले केन्द्र पूरा करता है और सैक्रेटरी तब्लीग़ और मुरब्बियान और जमाअत के लोगों को इसके लिए अमीर जमाअत का भी काम है भरपूर सहयोग दें। यही तरीका जिस से हम इस्लाम की खोई हुई शान को फिर से स्थापित कर सकते हैं। यही हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बेअसत का उद्देश्य था। ज़माना की हालत का नक्शा खींचते हुए और इस्लाम की वर्तमान स्थिति को सामने रख कर अपने दिल के दर्द का ज़िक्र फरमाते हुए और यह बताते हुए कि अब अल्लाह तआला चाहता है कि इस्लाम की शान-ओ-शौकत फिर से स्थापित हो, इस्लाम की बढ़त दुनिया में साबित हो। इस्लाम के विरोधियों की योजनाओं को अल्लाह तआला तबाह करना चाहता

है और नष्ट करने वाला है और उसके लिए अल्लाह तआला ने आपको भेजा और सिलसिले को स्थापित करने की व्यवस्था की है और अब अल्लाह तआला इस सिलसिला की महानता को दिखा रहा है।

एक स्थान पर हजरत मसीह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फरमाते हैं

"यह ज़माना कितना मुबारक ज़माना है कि ख़ुदा तआला इन उपद्रव से पूर्ण ज़माना में अपने फज़ल से आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि के सम्मान को प्रकट करने का लिए यह मुबारक इरादा फरमाया है।"(ख़ुदा तआला ने इन अपद्रवों के ज़माना में केवल अपने फज़ल से आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सम्मान को प्रकट करने के लिए यह मुबारक इरादा फरमाया है।) "कि ग़ैब से इस्लाम की सहायता का प्रबन्ध किया है और इस सिलसिला को स्थापित किया है। मैं उन लोगों से पूछना चाहता हूं जो इस्लाम के लिए अपने सीने में एक दर्द रखते हैं और उस की इज़्ज़त और महानता उन के दिलों में है वे बताएं कि क्या कोई ज़माना इस से बढ़ कर इस्लाम पर गुज़रा है जिस में इतनी गालियां और अपमान आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का किया गया हो और कुरआन शरीफ का अपमान हुआ हो।? फिर मुझे मुसलमानों की हालत पर बहुत अफसोस और दिल की गहराई से दुख होता है। कई बार मैं इस दर्द से व्याकुल हो जोता हूं कि इन मैं इतनी चेतना भी बाकी नहीं रही कि इस अपमान को महसूस कर लें। क्या आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का कुछ भी सम्मान अल्लाह तआला को मंज़ूर न था जो इतनी गालियों पर भी वह कोई आसमानी सिलिसला स्थापित न करता और इन इस्लाम के विरोधियों के मुंह बंद कर के आप (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) के सम्मान और पवित्रता को दुनिया में फैलाता जब कि ख़ुद ख़ुदा तआला और उस के फरिशते आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर दरूद भेजते हैं तो इस अपमान के समय इस सलामती का भेजना कितना अनिवार्य है और आप का ज़हूर अल्लाह तआला ने इस सिलिसला के रूप में किया है।" (अर्थात जमाअत अहमदिया को स्थापित कर के।) फरमाया "मुझे भेजा गया है कि मैं आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के खोए हुए सम्मान को फिर से स्थापित करूं और कुरआन शरीफ की सच्चाइयों को दुनिया को दिखाऊं। और ये सब काम हो रहा है परन्तु जिन की आंख़ों पर पट्टी है वे इस को नहीं देखते। हालांकि अब यह सिलिसला सूरज की तरह प्रकाशित हो गया है इस के निशानों से इतने लोग गवाह हैं कि अगर उन को जमा कर दिया जाए तो उन की संख्या इतनी हो कि सारी ज़मीन पर किसी बादशाह की इतनी फौज नहीं है। इतनी सूरतें इस सिलिसला की सच्चाई की मौजूद हैं कि इन सब को वर्णन करना भी आसान काम नहीं चूंकि इस्लाम का बहुत अपमान किया गया था इसलिए अल्लाह तआला ने इस अपमान के लिहाज़ से इस सिलिसला के सम्मान को दिखाया है।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 5 पृष्ठ 13-14 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

और हम गवाह हैं कि यह सम्मान अल्लाह तआला दिखा रहा है यहां भी प्रैस की और लोगों का ध्यान पैदा हुआ है और दुनिया के कुछ देशों में इस का खुल कर प्रकटन हो रहा है। अत: ये बातें जो हैं हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बातों की पुष्टि करने वाली हैं और जैसा कि मैंने कहा जो अल्लाह तआला के काम हैं तो वह ख़ुद कर रहा है लेकिन इसमें हमें हिस्सेदार बनाना चाहता है इसलिए इस में हिस्सादार बनें और पूरी तरह बनें।

फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक जगह हमें यह बताते हुए कि उम्र बढ़ानी है तो तब्लीग़ के काम में व्यस्त हो जाओ। फरमाते हैं कि

"सब मनुष्य अपने-अपने काम और उद्देश्य के लिए जिसके लिए वे आए हैं परिचित नहीं होते। कुछ का काम इतना ही होता है कि जानवरों की तरह खा पी लेना। वे समझते हैं कि इतना गोश्त खाना है। इतने कपड़े पहनने हैं आदि और किसी बात की उन को परवाह ही नहीं होती। इस प्रकार के आदमी जब पकड़े जाते हैं तो फिर एक बार में ही उन का ख़ात्मा हो जाता है।" फरमाया "जो लोग धर्म की सेवा में लगे हों उन के साथ नर्मी की जाती है उस समय तक जब तक वे उस काम और सेवा को पूरा न कर लें।" फरमाया कि "यदि कोई व्यक्ति अपनी उम्र बढ़ाना चाहता है और एक लंबा जीवन पाना चाहता है, तो उसे चाहिए कि जहां तक हो सके विशेष रूप से धर्म के लिए अपनी आयु को वक्फ कर दे। यह याद रखे कि अल्लाह तआला से धोखा नहीं चलता जो अल्लाह तआला को धोखा देता है वह याद रखे कि वह अपने नफ्स को धोखा देता है और उस के बदला में हलाक हो जाएगा।" फरमाया कि "अत: उमर बढ़ाने का इस से बढ़ कर कोई नुस्ख़ा नहीं है कि इंसान ईमानदारी और वफादारी के साथ इस्लाम को ऊंचा करने के लिए धर्म की सेवा में लग जाए और आजकल यह नुस्ख़ा बहुत ही कारगर है क्योंकि धर्म को आज ऐसे ही निष्ठावान सेवकों की ज़रूरत है। यदि यह बात नहीं है, तो उम्र का कोई ज़िम्मेदार नहीं है। यह इसी प्रकार चली जाती है।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 6 पृष्ठ 329-330 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने तब्लीग़ की तरफ ध्यान दिलाते हुए जो नसीहत हज़रत अली रज़ियल्लाहो अन्हो को फरमाई थी वही हमारे लिए भी एक सुनहरी नसीहत है। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक अवसर पर हज़रत अली को संबोधन करते हुए फरमाया कि अल्लाह की कसम तेरे द्वारा एक आदमी का सीधे रास्ता पर आ जाना तेरे लिए उच्च नस्ल के लाल ऊंट के मिलने से बेहतर है।

(सहीह अलबुख़ारी किताबुल जिहाद हदीस 2942)

लाल ऊंट को उस युग में एक बहुत ही मूल्यवान चीज़ माना जाता था। जिसके पास लाल ऊंट होता था उसे बहुत अमीर आदमी माना जाता है। अत: आपने फ़रमाया यह सांसारिक धन तथा सामान जो है इस बात के मुकाबला में कोई हैसियत नहीं रखता कि तुम तब्लीग़ करो और किसी की हिदायत का माध्यम बनो।

अत: बेशक यहां दुनिया कमाएं, लेकिन तब्लीग़ करने के लिए कुछ समय दें। मैंने तो महीने में एक दो दिन कहा है आप लोगों को इस से अधिक देना चाहिए। इस से दुनिया भी मिलेगी और अल्लाह तआला की प्रसन्नता भी प्राप्त होगी। जैसा कि मैंने शुरू में कहा था कि तब्लीग़ करने की वजह से आप का धार्मिक ज्ञान भी बढ़ेगा फिर आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि जो किसी नेक काम और हिदायत की तरफ बुलाता है उसे उतना ही इनाम मिलता है जितना कि इनाम पर अनुकरण करने वाले को मिलता है और उसके सवाब से कुछ कमी नहीं होती।

(सहीह मुस्लिम किताबुल इल्म हदीस 6804)

तो यह इस आयत का स्पष्टीकरण है जिसे शुरुआत में मैंने तिलावत किया था कि उससे बेहतर और कौन हो सकता है जो अल्लाह तआला की तरफ बुलाए। बुलाने वाले को भी सवाब मिल रहा है नेकी करने का भी सवाब मिल रहा है जिसको हिदायत मिल रही है उस को भी सवाब मिल रहा है। दावत इलल्लाह करने वाले को दुनिया का इनाम भी मिला उमर में बरकत पड़ गई और नेकी का सवाब मिला। अत: अल्लाह तआला के इनामों का वारिस बनने के लिए हमें ज़रूरत है इस समय तब्लीग़ और दुनिया की हिदायत के लिए समय दें।

फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम हमें इस्लाम की इस प्रमुख सेवा की तरफ बुलाते हुए एक स्थान पर फरमाते हैं कि

"अब समय तंग है। मैं बार-बार यह समझाता हूं कि कोई जवान यह भरोसा न करे कि अठारह या उन्नीस साल की उम्र है और अभी बहुत समय है। स्वस्थ व्यक्ति अपनी सेहत और स्वास्थ्य पर गर्व न करे। इसी तरह, कोई भी व्यक्ति जो अच्छी हालत रखता है, उसे अपनी अच्छी हालत पर भरोसा नहीं करना चाहिए। यह ज़माना इंकलाब का है। यह आख़री ज़माना है। अल्लाह तआला सच्चों और झूठों की परीक्षा करना चाहता है और अन्तिम अवसर दिया गया है। यह समय फिर वापस नहीं आएगा। यह वह समय है कि सभी नबियों की भविष्यवाणियां यहां आकर समाप्त हो जाती हैं। इसलिए ईमानदारी और सेवा का यह आख़री मौका है जो मानव जाति को दिया गया है। अब इस के बाद कोई मौका नहीं होगा, बड़ा ही दुर्भाग्यपूर्ण है वे जो इस अवसर को खो दे।" फरमाते हैं "केवल ज़बान से बैअत का कहना कोई भी चीज़ नहीं है बल्कि कोशिश करो और अल्लाह तआला से दुआएं मांगो वह तुम्हें सच्चा बना दे। इस में सुस्ती से काम न लो और चुस्त हो जाओ इस शिक्षा पर जो मैं प्रस्तुत कर चुका हूं अनुकरण करने के लिए कोशिश करो और इस राह पर चलो जो मैंने प्रस्तुत की है।

(मल्फ़ूज़ात भाग 6 पृष्ठ 263-264 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

जैसा कि मैंने पिछले ख़ुत्बा में भी कहा था और "किशती नूह" के हवाले से बात की थी कि "किश्ती नूह" में हमारी शिक्षा का जो हिस्सा है वह ज़रूर प्रत्येक अहमदी

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

को पढ़नी चाहिए बल्कि पूरी "किश्ती नूह" ही आपने फ़रमाया।

(उद्धरित मल्फ़ूज़ात भाग 3 पृष्ठ 408)

हमें दावत इलल्लाह की जो तौफ़ीक़ मिलनी है जो हमें नेक कर्मों की तौफ़ीक़ मिलनी है इस की तरफ भी जो यह हमारी शिक्षा वाले उपदेश हैं वे मार्ग दर्शन करते हैं और यही वह शिक्षा है जो हमें बेहतरीन मोमिन बना सकती है।

नेक कर्मों की तरफ अधिक ध्यान देने की तरफ आप फरमाते हैं कि

"यद्यपि सामान्य विचार में यह देखा जाता है कि लोग ला इलाहा इल्लल्लाह के भी मानने वाले हैं। पैग़म्बर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भी ज़बान से पुष्टि करते हैं ज़ाहिर में नमाज़ें भी पढ़ते हैं। रोज़े भी रखते हैं लेकिन मूल बात यह है कि रूहानियत बिल्कुल नहीं रही और दूसरी ओर इन नेक कर्मों के विरुद्ध काम करना ही गवाही देता है कि वह कर्म, नेक कर्म के रंग में नहीं किए जाते।"(अल्लाह तआला के विरुद्ध जो आदेश है उन के विरूद्ध सारे काम कर रहे हैं। ये बात प्रमाणित करती है कि जो काम मुसलमान कर रहे हैं वे नेक काम नहीं हैं और जो कुछ नेकियां कर भी रहे हैं वे केवल फरमाया) "बल्कि रस्म और आदत के रूप में किए जाते हैं क्योंकि उन में श्रद्धा और रूहानियत का कण मात्र भी नहीं है वरना क्या कारण है कि इन कर्मों की बरकतें और नूर साथ नहीं हैं। ख़ूब याद रखो कि जब तक सच्चे दिल से और आध्यात्मिकता से काम न हों, तब तक कुछ भी लाभ न होगा, और ये नेक कार्य काम न आएंगे। नेक कर्म उसी समय नेक कर्म कहलाऐंगे जब तक उन में किसी प्रकार का फसाद न हो। सुधार का विपरीत फसाद है। नेक वह है जो फसाद से दूर रहे। जिन की नमाज़ों में फसाद है और नफ्स के स्वार्थ छुपे हुए हैं उन की नमाज़ें अल्लाह के लिए हरगिज़ नहीं हैं और वे ज़मीन से एक बालिशत भी ऊपर नहीं जाती हैं क्योंकि उन में श्रद्धा की रूह नहीं और वे रूहानियत से ख़ाली हैं।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 6 पृष्ठ 237 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

अच्छे कर्मों की वास्तविकता क्या है? यह बताते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि

"याद रखो कि अल्लाह तआला रूह और आध्यात्मिकता पर नज़र करता है। वह ज़ाहरी कार्यों पर निगाह नहीं करता वह उनकी वास्तविकता और आंतरिक स्थिति को देखता है कि उन कार्यों की तह में स्वार्थ और नफसानियत है या अल्लाह तआला सच्ची की आज्ञाकारिता और ईमानदारी लेकिन मनुष्य कई बार ज़ाहरी कार्यों को देखकर धोखा खा जाता है जिसके हाथ में तस्बीह है या वह तहज्जुद और इश्राक पढ़ता है ज़ाहिरी तौर पर अबरार और नेकों के काम करता है, (बहुत नेकी की बातें कर रहा है) "तो उस को नेक समझ लेता है।" (एक आदमी साधारण रूप से जिस के हाथ में तस्बीह हो उस को दूसरा बड़ा नेक समझता है।) "परन्तु ख़ुदा तआला को ज़ाहिर पसन्द नहीं।" (जो ज़ाहरी चीज़ें हैं वह पसन्द नहीं।) "यह छिलका है अल्लाह तआला इसको पसन्द नहीं करता और कभी राज़ी नहीं होता जब तक वफादारी और सच्चाई न हो।"(ज़ाहरी चमक दमक एक चीज़ की ज़ाहरी अवस्था उस का एक ज़ाहरी खोल बाहर का ख़ोल ये बातें अल्लाह तआला को पसन्द नहीं।) फरमाया" बेवफा आदमी कुत्ते की तरह है जो मुरदार दुनिया पर गिरे हुए होते हैं वे भी ज़ाहिर में नेक नज़र आ रहे होते हैं परन्तु बुरे कर्म उन में पाए जाते हैं।" (बुरे काम करने वाले हैं।) "और छुपी हुई बुराइयां उन में पाई जाती हैं। जो नमाज़ें दिखावे से भरी हुई हों उन नमाज़ों को हम क्या करें और उन से क्या लाभ।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 6 पृष्ठ 239-240 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

अत: इस प्रकार के दिखावे के जो कर्म हैं इंसान के कुछ काम नहीं आ सकते। इस प्रकार के कर्म जिस में प्रत्येक क्षण अल्लाह तआला का भय और उस की प्रसन्नता समक्ष न हो उस का कोई लाभ नहीं होता। इस प्रकार की दावत इलल्लाह करने वालों के परिणाम भी आशा के अनुसार नहीं होते। चाहे वे जितनी चाहे कोशिश कर लें। अत: इस तरफ भी हमें जैसा के हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फरमाया ध्यान ध्यान देने की आवश्यकता है।

फिर नेक कर्म बहुत अधिक करने की तरफ आप ध्यान दिलाते हुए फरमाते हैं कि

"अत: जो आदमी ईमान को स्थापित रखना चाहता है वह नेक कर्मों में तरक्की करे। ये रूहीना बातें हैं और कर्मों का प्रभाव आस्थाओं पर पड़ता है।" (अगर मज़बूत ईमान होना है तो नेक कर्म करने ज़रुरी हैं।) "जिन लोगों ने बुराइयां आदि धारण की हैं उन को देखो तो अन्त में पता चलेगा कि उन का ख़ुदा पर ईमान नहीं। हदीस शरीफ में इसीलिए है कि चोर जब चोरी करता है तो वह मोमिन नहीं होता और ज़ना करने वाला ज़ना करता है तो मोमिन नहीं होता। इस के यही अर्थ हैं कि उस के बुरे कर्मों ने उस के सच्चे और सही अक़ीदे पर प्रभाव डाल कर उसे नष्ट कर दिया है। हमारी जमाअत को चाहिए कि नेक कर्म बहुत अधिक करे। अगर उस की यही अवस्था रही जैसे दूसरों की है तो फिर अन्तर किया हुआ।? और ख़ुदा तआला को उन का ध्यान रखने और सुरक्षा की क्या ज़रूरत है।? ख़ुद तआला उस समय ध्यान देगा जब तक्वा पवित्रता और नेकी से उसे ख़ुश करोगे। याद रखो कि उस का किसी से कोई रिशता नहीं। "(अर्थात अल्लाह तआला का किसी से कोई रिशता नहीं।) "केवल ज़ुबानी बातों से कोई बात नहीं बना करती।" (व्यर्थ बातें करते रहो या दावा करते रहो इन दावों का कोई लाभ नहीं। जब तक वफा न हो।) फरमाया कि "सच्ची इताअत एक मौत है जो नहीं करता वह ख़ुदा तआला से शतरंज बाज़ी करता है कि मतलब के समय तो ख़ुदा से ख़ुश होता है और जब मतलब न हो तो नाराज़ हो गया। मोमिन का यह तरीका नहीं होना चाहिए। भला ध्यान तो दो कि अगर ख़ुदा तआला प्रत्येक मैदान में सफलता देता है और कोई असफलता की अवस्था कभी न आए तो क्या सब जहान तौहीद को मानने वाला नहीं हो सकता।"(एक ख़ुदा को मानने वाला न बन जाए।) "और विशेषता क्या रहेगी। इसलिए जो मुसीबत में वफा और सच्चाई दिखाएगा ख़ुदा तआला उसी से ख़ुश होगा।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 6 पृष्ठ 366-367 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

अत: नेक कर्म उस समय तक नेक कर्म हैं जब इताअत भी पूर्ण हो और पूर्ण आज्ञाकारिता के साथ की जाऐं। अल्लाह तआला की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए किए जाएं। जब अपनी इच्छाओं की दीवारों को पूर्ण रूप से गिरा दिया जाए और केवल एक ही उद्देश्य हो कि हम ने अपने प्रत्येक कर्म के पीछे ख़ुदा तआला की ख़ुशी को प्राथमिकता देनी है। अल्लाह तआला के आदेशों के अनुसार काम करना है और यह सच्ची आज्ञाकारिता यही है। यही नहीं कि जहां लाभ प्राप्त हो जाए वहां इताअत और आज्ञाकारिता की घोषणा कर दी और जहां इच्छा के अनुसार काम न हो वहां शिकायत शुरु कर दीं। हमेशा याद रखें कि निज़ाम से भी अनावशयक शिकायतें निज़ाम से हटाती हैं। ख़िलाफत से दूर करती हैं और फिर इंसान की अल्लाह तआला से दूरी पैदा हो जाती है। हम ने कुछ लोगों का यही अन्त देखा है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि

" हमारे प्रभुत्व के हथियार, इस्तिग़फार पश्चाताप , धार्मिक ज्ञान से परिचय, ख़ुदा तआला की महानता को समक्ष रखना और पांच बार नमाज़ों को अदा करना है। नमाज़ दुआ की स्वीकृति की चाबी है। जब नमाज़ पढ़ो तो उस में दुआ करो और उपेक्षा न करो और हर एक बुराई से बचो, चाहे वह अल्लाह तआला के अधिकार हों या उस के बन्दों के हुकूक हों बचो।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 5 पृष्ठ 303 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

अल्लाह तआला हमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के संदेश के प्रकाशन और संदेश के प्रभुत्व का हिस्सा भी बनाए। संदेश को पहुंचाने का हिस्सा बनाए। तौब: इस्तिग़फार करते हुए दुआएं करते हुए हम तब्लीग़ के काम को करने वाले हों और अल्लाह के अधिकार और अल्लाह के बन्दों के अधिकार अदा करने वाले हों। यही अधिकार हैं जो नेक कर्म करने की तरफ ध्यान करवाते हैं। हमारे प्रत्येक काम में अल्लाह तआला की प्रसन्नता हमारे समक्ष हो। अल्लाह तआला के पूर्ण आज्ञाकारियों में हम शामिल हों और जब हम इन चीज़ों पर ध्यान केंद्रित रखेंगे तो अल्लाह तआला के वादों के अनुसार इन्शा अल्लाह तआला, इस्लाम की विजय के दिन भी देखने वाले होंगे। अल्लाह तआला हमें इस की तौफीक़ प्रदान करे।

☆ ☆ ☆

दुआ का अभिलाषी
जी.एम. मुहम्मद शरीफ़
जमाअत अहमदिया मरकरा (कर्नाटक)

पृष्ठ 2 का शेष

रूप से हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेहिल अज़ीज के ख़ुत्बों से बहुत अधिक प्रभावित हुए। महोदय ने बताया कि इण्डोनेशिया में इन का सारा परिवार और ख़ानदान कट्टर सुन्नी हैं। बहुत अधिक गुमराही वाले मार्ग और बिदअतों में पड़े हुए हैं। ख़ुदा तआला ने उन्हें अहमदियत के नूर से प्रकाशित किया जलसा यू.के शामिल हो कर एक नई रूहानी जीवन से भर गए हैं। कुरआन तथा हदीस में इमाम महदी अलैहिस्सालम की जमाअत की जो निशानियां और चिन्ह वर्णन किए गए हैं उन की व्यावहारिक और सुन्दर तस्वीर इस जलसा सालाना में दिखाई दी जो उन के ईमान की मज़बूती का कारण हुआ। महोदय ने बताया कि वह अगले साल अपने बच्चों को भी जलसा सालाना यू.के में लाने का इरादा रखते हैं।

* एक नए मेहमान Neddy Garrido साहिब भी शामिल हुए जो ग़ैर अहमदी हैं। जमाअत ग्वाटेमाला के जनरल सेक्रेटरी David Gonzalez साहिब उन को तब्लीग़ कर रहे हैं। महोदय ने बताया कि वह जलसा सालाना में शामिल हो कर इस्लाम की शिक्षा से बहुत प्रभावित हुए हैं। आशा है कि जलसा सालाना की बरकत से बहुत जल्द बैअत की तौफ़ीक़ प्राप्त करेंगे।

ग्वाटेमाला के पड़ोसी देश मेक्सीको के एक प्रान्त Chiapa में जमाअत ग्वाटे माला काम कर रही है। इस स्टेट के एक नए अहमदी Ismael Gomez Lopez साहिब भी आए थे। महोदय छात्र हैं जो जामिया अहमदिया में शिक्षा प्राप्त करने की इच्छा रखते हैं। उन का जीवन वक़्फ़ करने का इरादा है।

ग्वाटे माला के वफद ने बताया कि जलसा का प्रबन्ध बहुत अच्छा था। मीडिया में इस्लाम के बारे में जो ग़लत प्रोपगेण्डा है वह भूल धारणा है। इस्लाम की वास्तविक शिक्षा हमें यहां पर नज़र आई जो बहुत शान्ति तथा सलामती वाली शिक्षा है। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया आप David Gonzalez साहिब जो जमाअत के सेक्रेटरी हैं उन को देखें। अहमदियत स्वीकार करने के बाद उन में बहुत तब्दीली हुई है। उन्होंने सहीह धर्म धारण किया है।

एक मेहमान ने निवेदन किया कि जलसा के दौरान हर आदमी जो मिला है इस प्रकार था जैसा कि मेरा दोस्त था। प्रत्येक प्यार तथा मुहब्बत से मिलता था। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने फरमाया हम सब इंसान हैं। लोग विभिन्न धर्मों से सम्बन्ध रखने वाले होते हैं परन्तु वास्तविक बात यह है कि इन्सानियत का सम्मान करना चाहिए इस बात को छोड़ कर के किस का क्या धर्म है। अगर ख़ुदा से प्यार है तो फिर उस की सृष्टि से भी प्यार होना चाहिए।

एक मेहमान ने निवेदन किया कि जब से हमारा जमाअत अहमदिया से सम्बन्ध हुआ है हमें इस्लाम की वास्तविक और सुन्दर शिक्षा का पता चला है। यहां जलसा सालाना में शामिल होकर इस्लाम की वास्तविक शिक्षा के बारे में पता चला है।

ग्वाटेमाला के अमीर ने निवेदन किया कि सुलैमान Rodriguez साहिब अहमदी ख़ुद्दाम हैं कुछ समय पहले अहमदी हुए हैं। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया सुलैमान को अपने साथ रख कर धार्मिक शिक्षा दें और इन की तरबियत करें ताकि मुअल्लिम का काम कर सकें। फरमाया इन के लिए कोई छोटा कोर्स जामिया केनडा या जामिया घाना में बनाया जा सकता है। यह वहां विशेष कोर्स कर सकते हैं। आप इन के लिए कोई शार्ट कोर्स बनाएं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया Domingo साहिब अपने इलाका में हाई कोर्ट की तरफ से जज हैं तो फैसले करते हैं पूर्ण रूप से न्याय करें। अपने फैसलों में न्याय का माप दण्ड स्थापित करें और वहां के लोगों में भी यह माप दण्ड स्थापित करने की कोशिश करें।

ग्वाटेमाला के वफद की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ से यह मुलाकात 12 बजकर 20 मिन्ट तक जारी रही। अन्त में वफद से सारे सदस्यों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के साथ तस्वीर बनाने का सौभाग्य प्राप्त किया।

गिनी कनाकरी के वफ्द की हुज़ूर अनवर से मुलाकात

इस के बाद गिनी कनाकरी से आने वाले प्रतिनिधिमंडल ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरहिल अज़ीज़ के साथ मुलाकात की सआदत पाई। गिनी कनाकरी से 4 व्यक्तियों का प्रतिनिधिमंडल आया था जिसमें माननीय अल्हाज मामा दो सलीम बाह साहिब उप राष्ट्रपति नेशनल असेंबली गिनी कनाकरी, माननीय नूरुद्दीन फ़ादीगा साहिब महानिदेशक रिलीजस अफेयर्स और राष्ट्रीय निदेशक आफ़ पुलिस हसन केटा साहिब शामिल थे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज के पूछने पर प्रतिनिधिमंडल के सदस्यों ने कहा कि जलसा सालाना का प्रबंधन बहुत अच्छा था, यह एक महान जलसा था। ऐसा लगता था कि हर कोई लड़ी में जुड़ा हुआ है सुरक्षा व्यवस्था भी असाधारण थे वहां बड़ी संख्या में लोग थे, कोई संघर्ष नहीं था।

*अल्हाज मामादो सलीम बाह साहिब उप राष्ट्रपति नेशनल असेंबली गिनी कनाकरी ने अपने भाव प्रकट करते हुए कहा: जलसा की व्यवस्था देख कर और अनुशासन को देखकर हम बहुत प्रभावित हुए। तलाश करने का बावजूद किसी भी विभाग में कोई कमी नहीं पाई गई। प्रचुर संख्या में शामिल होने वाले वालों के बावजूद, कोई ख़राब मामला नहीं हुआ। महोदय ने कहा: मुझे हज्ज करने का भी अवसर मिला है और कई इस्लामी देशों के धार्मिक कार्यक्रमों में शामिल हो चुका हूं, लेकिन मैंने इस तरह के एक अद्भुत और उत्तम व्यवस्था को कभी भी नहीं देखा है। यह इस्लाम की सच्ची भावना है कि हमें यहां देखने को मिली। छोटे छोटे बच्चों का प्रशिक्षण भी असाधारण है। बच्चे पूछते की किसी चीज़ की आवश्यकता तो नहीं है? उसके बाद हम जो चाहते हमें प्रदान कर दिया जाता और मुस्कुराते चेहरे के साथ मिलते। न केवल एक बार बल्कि बार-बार हम से पूछते। यहां विभिन्न देशों से लोग आए हुए थे। सभी एक दूसरे के साथ इस प्रकार मिल रहे थे जैसे आपस में भाई और एक दूसरे के रिश्तेदार हैं। आप लोग अपने काम में सबसे आगे हैं और आप सही रास्ते पर हैं। मुझे यकीन है कि आप लोगों के पीछे ख़ुदा तआला का हाथ है। हम इंशा अल्लाह अपने देश वापस जाकर सरकार को इस ओर जरूर ध्यान दिलाएंगे कि वह जमाअत को प्रत्येक मामले में मदद करे ताकि आप की जमाअत हमारे देश में भी सही इस्लामी शिक्षाओं द्वारा हमारा मार्गदर्शन कर सके। महोदय ने कहा हमारे यहां 90 प्रतिशत मुसलमान आबाद हैं हम सब एक साथ मिल कर रहते हैं और हम शांति चाहते हैं और जमाअत अहमदिया हमारा हिस्सा बने। जमाअत अहमदिया एक शांति प्रिय जमाअत है। महोदय ने कहा कि न्याय के बिना और शांति की स्थापना नहीं की जा सकती। जो भी मैंने यहां आकर देखा है, आपकी गुणवत्ता और आदर्श काम दुनिया की सब जमाअतों से आगे है। मैंने सिएरा लियोन में दस साल बिताए हैं और इस साल वहां जलसा पर गया था। बहुत से लोगों से मिला। देश के राष्ट्रपति, मंत्री, संसद सदस्य और अन्य प्रमुख अधिकारी आए। आप ही सही रास्ते पर हैं और मुझे यकीन है कि ख़ुदा तआला आप के साथ है। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरहिल अज़ीज़ ने फरमाया: हम तो वही कर रहे हैं जो इस्लाम की शिक्षा है। अगर मुसलमान इस्लाम के इस सिद्धांत का पालन करें तो हर जगह फसाद समाप्त हो जाएगा। हमारा काम इन्शा अल्लाह जारी रहेगा दुनिया के सामने इस्लाम की शांति वाली शिक्षा पेश करके मानवता के मूल्यों को सिखाएं। क्योंकि मानवता के मूल्यों पर ही आगे शांति स्थापित हो सकती है। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरहिल अज़ीज़ ने फरमाया कि अगर दुनिया सही इस्लामी शिक्षा का पालन करने लग जाए तो पश्चिमी दुनिया कभी इस्लामी शिक्षा पर आपत्ति न करे और मुसलमानों पर आपत्ति न करे। इसलिए हमें मानव मूल्यों को एक साथ स्थापित करना चाहिए।

* गिनी किनाकरी से महानिदेशक रिलीजस अफेयर्स नूरुद्दीन फ़ादीगा साहिब ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा, मैं बतौर महानिदेशक रिलेजस मामलों के अक्सर धार्मिक कार्यक्रमों में भागीदारी करता हूं लेकिन मैंने ऐसा अच्छा प्रबंधन कहीं नहीं देखा। इमाम जमाअत अहमदिया के भाषण और विशेष रूप से समाप्त वाले दिन के भाषण असाधारण महत्त्व के थे। इस सम्बोधन का सारी मुस्लिम उम्मत को सुनना चाहिए। ये नसीहतें हमें इस्लाम का सही रास्ता दिखा सकती हैं। जिहाद की जो तफसीर ख़लीफतुल मसीह ने की मैंने इस तरह की तफसीर इससे पहले कभी नहीं सुनी। मुझे बहुत ख़ुशी हुई कि दुनिया में एक समुदाय है जो सही रंगों में मुसलमानों के नाम पर पूरा उतरती है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरहिल अज़ीज़ ने राष्ट्रीय पुलिस निदेशालय को संबोधित करते हुए फरमाया कि आपने देखा है, यहां हमारे समारोह में पुलिस की कोई आवश्यकता नहीं है। यहां हमारे पूर्व पुलिस के अधिकारी ने बताया कि जमाअत ने इतनी संगठित व्यवस्था का आयोजन किया है कि पुलिस की कोई आवश्यकता नहीं है। नए अधिकारी जो उनके बाद आए थे, उन्होंने भी यही विचार व्यक्त किया था। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरहिल अज़ीज़ ने कहा: मौसम अच्छा नहीं था। तब भी सभी काम किए गए और सभी व्यवस्थाएं पूरी हुईं।

नेशनल डायरेक्टोरेट ऑफ पुलिस, हंसेन कीता साहिब ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा: क्योंकि मेरा विभाग पुलिस से संबंधित है। यही कारण है कि मैंने विशेष रूप से सुरक्षा की समीक्षा की। सुरक्षा का एक बड़ा प्रबंधन था जिसमें मुझे कोई कमी नज़र नहीं आई। फिर ख़लीफतुल मसीह की तकरीरें बहुत असामान्य थी, जिन से न केवल ईमान में वृद्धि हुई, बल्कि ख़लीफा की तकरीरें सुन कर अपने मुस्लिम होने पर गर्व महसूस हुआ। हुज़ूर अनवर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला

बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने जो फरमाया है इस पर चल कर हम दुनिया में शान्ति स्थापित कर सकते हैं। हमने यहां बहुत कुछ सीखा है हम दिल से आप के साथ हैं।

गिनी कनाकरी के वफद की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ से यह मुलाकात 12 बजकर 40 तक जारी रही। अंत में, प्रतिनिधिमंडल के सदस्यों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के साथ तस्वीर बनाने का सौभाग्य प्राप्त किया।

विभिन्न देशों से आने वाले इलेक्ट्रॉनिक और प्रिंट मीडिया के प्रतिनिधियों के साथ प्रेस कॉन्फ्रेंस

इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ महमूद हाल में पधारे, जहां संवाददाता सम्मेलन आयोजित किया गया था। विभिन्न देशों से आने वाले इलेक्ट्रॉनिक और प्रिंट मीडिया के पत्रकारों, प्रतिनिधियों और टीवी के प्रतिनिधि वहां मौजूद थे।

*मैक्सिको से आई हुई एक पत्रकार Flor del Rosario जो कि राष्ट्रीय अख़बार Excelsior से जुड़ी हुई हैं, ने सवाल किया कि मेक्सिको के उत्तरी सीमा के साथ यू.एस.ए है। यह मैक्सिकन अर्थव्यवस्था के लिए अच्छा है, लेकिन कुछ नकारात्मक पहलू भी हैं, लोग जाते हैं, ड्रग्स और हथियारों का व्यवसाय होता हैं। अब डोनाल्ड ट्रम्प की सरकार आई है, आप इस मामले को कैसे देखते हैं? हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: अब ट्रम्प की सरकार आने के बाद यह फैसला हुआ है कि सीमा पर पूरी दीवार स्थापित कर दी जाए। नकारात्मक और सकारात्मक पहलू हैं, जैसा कि आपने कहा था कि व्यापार भी है और तस्करी आदि। मुझे लगता है पूर्ण सीमा को बंद करने के बजाय, बेहतर निगरानी की जानी चाहिए ताकि हर काम कानून के अनुसार हो। अगर किसी को सीमा पार करनी है, तो कानूनी तरीके से करें जो व्यापार होना है कानूनी आधार पर हो। इस प्रकार, दोनों देश एक-दूसरे से लाभान्वित होंगे।

*ग्याना से आई हुई एक पत्रकार बीबी शहनाज खान साहिबा (जो कि एम.टीवी चैनल 14 से जुड़ी हैं।) ने सवाल किया कि क्या आप मुझे बता सकते हैं कि आप के पास मुस्लिम उम्मत में एकता का समाधान क्या है?

उस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने कहा कि समाधान तो हमें ख़ुदा से एकमात्र बेहतर मिल चुका है और समाधान का उल्लेख आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भी किया है कि अंतिम समय में मुसलमान विभिन्न संप्रदायों में बंट जाएंगे और हर समुदाय का अपना तरीका होगा। ये कुरआन की अपने तरीके से व्याख्या करेंगे। ऐसे समय में एक सुधारक आएगा, जो कि मसीह मौऊद और महदी मौऊद होगा।।आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया, जब वह व्यक्ति आएगा तो उसे जा कर मेरा सलाम पहुंचाना। इसका मतलब यह था कि मुस्लिम उम्मत की शांति, सौहार्द और प्रेम के लिए उनके साथ जुड़ जाओ। हम विश्वास रखते हैं कि यह आदमी आ चुका है जो जमाअत अहमदिया के संस्थापक हजरत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम हैं। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: यह बात नहीं है कि किसी ने दावा किया कि वह मसीह और महदी था और हमने स्वीकार कर लिया है। वहां आने वाले लोगों के साथ आसमानी निशान भी थे, जिनके बारे में ख़बर आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पहले दी थी। इन आसमानी चिन्हों में से एक सूर्य और चंद्रमा का ग्रहण था जो कुछ महीनों की विशिष्ट तिथियों में होगा। फरमाया कि रमज़ान के महीने में चाँद ग्रहण की तिथि की पहली तारीख को चाँद ग्रहण लगेगा और सूर्य ग्रहण की तिथियों में से दूसरी तिथि को ग्रहण लगेगा। इसलिए, ये दोनों ही निशान एक बार पूर्वी दुनिया में और फिर पश्चिम दुनिया में पूरे हुए। यह तो एक निशान है, और भी कई संकेत थे, और फिर उन्होंने ख़ुद ही दावा किया कि मैं ही वह व्यक्ति हूँ और अब ख़ुदा तआला ने मेरी सच्चाई पर एक चिन्ह दिखाया है। अत: मुस्लिम उम्मत मेरे साथ जुड़ें और एकजुट हों। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: हम एक तब्लीग़ी जमाअत हैं। हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और आप के बाद भी हम लगातार प्रचार करके यह संदेश पहुंचा रहे हैं और हर साल लाखों लोग और मुसलमान इस्लाम अहमदियत के दायरे में शामिल हो रहे हैं। तो यह वह समाधान है जिसे अल्लाह तआला ने दिया है। यदि आप इसका पालन करते हैं, तो आप सफल होंगे। यदि आप ऐसा नहीं करते हैं तो आप मुस्लिम दुनिया में जो फसाद देख रहे हैं, देखते रहेंगे।

*गेमबिया रेडियो और टेलीविजन सेवा के प्रतिनिधि इब्राहिम जाटा ने अर्ज़ किया: हम ने इस्लामी एकता का एक भव्य नमूना यहाँ जलसा सालाना में तीन दिन देखा है। ख़लीफतुल मसीह से मेरा सवाल यह है कि जो बैअत करते हैं, उनकी सबसे महत्त्वपूर्ण ज़िम्मेदारी क्या है?

इस सवाल पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया ख़िलाफत की बैअत करना वास्तव में इस युग के सुधारक की बैअत करना है, जिसे आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणी के अनुसार अल्लाह तआला ने भेजा है। जैसा कि मैंने अभी कहा है। जमाअत अहमदिया के संस्थापक ने कहा है कि मुझे दो उद्देश्यों से भेजा गया है एक यह है कि मानव जाति अपने निर्माता की पहचान करे, और अपने ख़ालिक से प्रेम करे और उस के अधिकार अदा करे और दूसरा यह कि एक दूसरे के अधिकारों को पहचानने वाले हों, ख़ुदा तआला की सृष्टि के अधिकार अदा किए जा रहे हों। तो बैअत करने के बाद यह दो ज़िम्मदारियां हैं जो बैअत करने वाले को अदा करनी चाहिए अर्थात अल्लाह के अधिकार और अल्लाह के बन्दों के अधिकार।

*पेरागोए से आए एक पत्रकार ने सवाल किया कि लैटिन और साऊथ अमेरिका में जमाअत अहमदिया की क्या योजना है और आप कब हमारे यहां जाएँगे?

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया कि जहां तक लक्ष्यों और योजना का संबंध है तो वे जिनके बारे में मैंने वर्णित किया है कि लोगों को ख़ुदा तआला के नज़दीक लाना है। दूसरे, मनुष्यों को एक साथ मिलकर लाएं। यह लैटिन अमेरिका, उत्तरी अमेरिका, दक्षिण अमेरिका, मध्य पूर्व, अफ्रीका, यूरोप, मध्य पूर्व और एशिया और हर जगह के लिए है। प्रश्न के दूसरे हिस्से के बारे में, मैं चाहता हूं कि मैं जल्द से जल्द आप के देश में आऊं।

* मैसिडोनिया के एक पत्रकार ने कहा कि मैं हुज़ूर मैं मैसेडोनिया से संघीय मीडिया का प्रतिनिधित्व कर रहा हूं। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: आप तो पहले भी आए हुए हैं जिस पर पत्रकार ने कहा जी हुज़ूर यह दूसरी बार मुझे जलसा सालाना में शामिल होने का अवसर प्राप्त हो रहा है।

पत्रकार ने सवाल किया कि लंदन में वर्तमान में हुए आतंकवादी हमलों के बाद ने लोगों की राय पर जो प्रभाव हुआ है उस के बारे में आप क्या सोचते हैं?

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया, आप उन हमलों का ज़िक्र कर रहे हैं जो हाल के वर्षों में लोगों को पर वैन चढ़ाने और छुरी के वार के हुए हैं। जब लोग देखते हैं कि एक मुसलमान यह हमले कर रहा है, तो यह जनता द्वारा प्रतिक्रिया होती है और मुसलमानों के ख़िलाफ बोलने और मुसलमानों पर आरोप लगाने वालों की बात भी उचित है। यही तो मैं हमेशा बताता आया हूं कि ये लोग जो ऐसा कर रहे हैं, यह इस्लामी शिक्षाओं की वास्तविक तस्वीर नहीं है। इस्लाम तो यह नहीं कहता। एक तो ऐसे लोग निराश व्यक्ति हैं, और दूसरा उन्हें आतंकवादियों ने या चरमपंथियों द्वारा उन्हें कट्टरता की शिक्षा दी जा रही है। सरकार को कड़ाई से उन्हें नियंत्रित करना चाहिए और उन्हें कानून के सामने जवाब देना चाहिए और कानून के अनुसार कार्य करना चाहिए। इसके अलावा, हम अहमदियों ने पीड़ितों और देश के साथ एकजुटता व्यक्त की है। यही हमारी प्रतिक्रिया है।

रवांडा के एक पत्रकार Kamanzie हुसैन साहिब ने बताया कि मैंने कल जामिया को देखा है। अहमदिया मुस्लिम जमाअत बहुत अच्छा काम कर रही है। यहां पर बच्चों को मिशनरी बनाया जाता हैं मेरा सवाल यह है कि आप इस तरह के बच्चों की क्षमताओं को सीमित नहीं करते हैं? मुबल्लिग़ के अलावा, दुनिया में अन्य काम सीख सकते हैं और काम कर सकते हैं। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने कहा कि यह एक मिशनरी प्रशिक्षण कॉलेज है। हर कोई डॉक्टर नहीं बन सकता है और न ही इंजीनियर बन सकता है। हर एक शिक्षक नहीं हो सकता इसलिए उन बच्चों ने धार्मिक शिक्षा पाने का फैसला किया है। उनके लिए यह आवश्यक नहीं है उन्होंने स्वयं इस ज्ञान को चुना है और अब हम ने उन इच्छुक बच्चों के लिए, लोगों के लिए जामिया बनाया हैं। जहां तक धर्मनिरपेक्ष और सांसारिक शिक्षा का सवाल है, तो यह शिक्षा सरकारी स्कूलों से मिल रही है। इसके अलावा, तीसरी दुनिया में, हम सैकड़ों प्राथमिक, माध्यमिक और उच्च विद्यालय चला रहे हैं, जहां विश्वविद्यालयों की शिक्षा को पढ़ाया जा रहा है और इन देशों में ऐसे कई राजनेता, डॉक्टर और इंजीनियर हैं जो इन देशों में हमारे स्कूलों से पढ़ रहे हैं। इसलिए हम केवल धार्मिक शिक्षा पर ध्यान केंद्रित नहीं कर रहे हैं, लेकिन हम सभी प्रकार की शिक्षा को सिखाना चाहते हैं। हम मानते हैं कि हर कोई अपनी क्षमता और योग्यता के अनुसार ज्ञान प्राप्त कर सकता है। आप यही पूछना चाहते थे न।

* पत्रकार ने कहा कि उन बच्चों को जो शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं, उन्हें अन्य सांसारिक ज्ञान सीखने का अवसर क्यों नही दिया जा रहा। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया, हम अवसर दे रहे हैं। सिलिसला अहमदिया के चौथे ख़लीफा ने एक योजना जारी की थी कि माता पिता अपने बच्चों को धर्म के

लिए समर्पित करें तब से, दुनिया भर में माताएं अपने बच्चों को समर्पित कर रहे हैं और अब तक 60,000 से अधिक बच्चों को उन की माताओं ने समर्पित किया है उनमें से 150 यू.के में धार्मिक शिक्षा का अध्ययन कर रहे हैं,इतनी ही संख्या में अध्ययन जर्मनी, कनाडा और घाना में किया जा रहा है जहां हम अन्तर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय चला रहे हैं। केवल कुछ सौ छात्र धार्मिक अध्ययन कर रहे हैं। और यह भी उनके लिए आवश्यक नहीं है, उनके लिए क्षेत्र खुले हुए हैं। जैसा कि मैंने कहा, उन्होंने ख़ुद ही यह शिक्षा प्राप्त करने का फैसला लिया है और वे मुबल्लिग़ बनने के लिए तैयार हैं जो डॉक्टर बनना चाहता है, मैडिसन का अध्ययन कर रहे हैं, जो इंजीनियर बनना चाहते हैं, इंजीनियरिंग की डिग्री प्राप्त कर रहे हैं शिक्षक हैं, वकील हैं, अन्य क्षेत्र हैं। यह सोच ठीक नहीं है कि हम उन्हें मजबूर कर रहे हैं। यह उन की अपनी पसंद है। अब आपने पत्रकारिता का क्षेत्र चुना है तो किसी ने मजबूर किया था? आप डॉक्टर क्यों नहीं बने? तो हर एक की अपनी इच्छा होती है वह ख़ुद के लिए बेहतर समझता है वह करता है।

* बोलीवियाई पत्रकार कार्लोस ने सवाल किया कि बोलीविया में इस प्रकार के लोग हैं जो बहुत मज़बूत ईसाई परिवारों के हैं लेकिन अब वे ईसाई धर्म का पालन नहीं कर रहे हैं। तो ईसाइयों के लिए आपका संदेश क्या है? यदि वे वहां के इमाम के पास आते हैं, तो मुझे क्या आशा करनी चाहिए? हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया कि इस प्रकार तो कई मुसलमान ऐसे हैं जो अपने धर्म का पालन नहीं करते हैं। ये लोग व्यवहार के मुसलमान नहीं हैं इसी प्रकार अन्य धर्मों की अवस्था है यही कारण है कि मैं हमेशा कहता हूं कि इस बात को छोड़ते हुए कि आपका धर्म क्या है, जो भी धर्म है, यह कोशिश करें कि उस की वास्तविक शिक्षाओं का पालन करने की कोशिश करें। क्योंकि ऐसा कोई धर्म नहीं है, जिसने यह शिक्षा दी हो कि दूसरों के अधिकारों को मार लो और उन पर अत्याचार करने के लिए सिखाया है। इसलिए यदि आप अपने धर्म की मूल शिक्षाओं का पालन करते हैं, तो फिर भी एक भाईचारा, प्रेम, सद्भाव और शांति का माहौल हो जाएगा। तो उन लोगों के लिए, यही शिक्षा है कि अपने धर्म की मूल शिक्षाओं की तरफ लौटें और मानवीय मूल्यों को अधिक महत्व दें। यही संदेश है ।

* सिएरा लियोन के एक पत्रकार ने कहा, हुज़ूर! मुझे अवसर प्रदान करने के लिए धन्यवाद मेरा प्रश्न विकास के कार्यक्रमों के बार में है। अहमदिया जमाअत कई विकास के कार्यक्रम चला रही है। इसमें शिक्षा, स्वास्थ्य और अन्य सामाजिक और आर्थिक कार्यक्रम शामिल हैं। अहमदिया जमाअत इस प्रकार की जमाअत है जो सरकार को काफी हद तक मदद कर सकती है। इसी तरह कुछ दूसरे देश भी हैं। मेरा प्रश्न यह है कि अहमदिया जमाअत अन्य अफ्रीकी देशों में जहां जमाअत अभी इतनी मज़बूत नहीं है या अभी वहीं नहीं गई है वहां जाने का क्या प्रोग्राम रखती है?

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: जैसा कि मैंने कहा, हमारी जमाअत एक तब्लीग़ी जमाअत है, और हमारे संसाधनों के अनुसार, हम नए मिशन भी खोल रहे हैं। यह हमारे संसाधनों पर निर्भर करता है। हम तो दुनिया के हर कोने तक पहुंचें और अफ्रीका के हर कोने तक पहुंचें ताकि सही शिक्षा और इस्लाम की सच्ची शिक्षा सभी देशों को लोगों तक पहुंचाएं। हम तो अपनी पूरी कोशिश कर रहे हैं कि दुनिया में अपने मिश्नों और अन्य परियोजनाओं को बढ़ाएं। विशेष कर के अफ्रीका में।

* बेनिन के नेशनल टीवी के निदेशक जमीमा कटराई साहिब ने भी इस प्रेस कॉन्फ्रेंस में भाग लिया। उन्होंने सवाल किया कि विश्व के विभिन्न देशों में तीसरा विश्व युद्ध शुरू हो गया है। विभिन्न आतंकवादी समूह लड़ रहे हैं। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने जलसा पर अमन का सन्देश दिया है। हुज़ूर ने यह भी कहा कि शांति की शिक्षा परिवार के स्तर पर दी जानी चाहिए। तो महिलाओं को इस संदर्भ में किस तरह की सलाह देना चाहते हैं? दुनिया में शांति स्थापित करने में महिलाएं क्या भूमिका अदा कर सकती हैं?

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: मैं तो दस साल से इस संदेश को दुनिया को दे रहा हूं कि लोग एक-दूसरे का सम्मान करें और एक दूसरे के अधिकारों का सम्मान करें। और शांति तथा सद्भाव के साथ रहें और महिलाओं की ज़िम्मेदारियों के संबंध में, मैंने लजना को अपने संबोधन में कहा था कि उन पर अपने बच्चों को ऐसे तरीके से प्रशिक्षित करने की ज़िम्मेदारी है कि वे बड़े हो कर अच्छे शहरी बनें। उन्हें अच्छी शिक्षा दें ताकि वे अच्छे नेता, अच्छे राजनेता, शिक्षक,अच्छे इंजीनियर, अच्छे पति,अच्छे भाई हों। तो औरत की यह भूमिका है इसलिए, इस्लाम के संस्थापक हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया है कि यदि तुम एक माँ के रूप में अपने कर्तव्यों को पूरा करते हो, तो तुम अपने भविष्य की पीढ़ी की रक्षा करने में सक्षम होगे। इसलिए, अपने इस मुख्य काम, बच्चों के प्रशिक्षण और उनका सबसे अच्छा उत्थान करने के कारण, उन्हें बहुत ही उच्च स्थान दिया गया है और ऐसा कहा जाता है कि उन्हें प्रशिक्षण देकर वे अपने बच्चों को स्वर्ग में ले जाने वालियां हैं। फरमाया कि जन्नत माता के कदमों के नीचे है। इसका अर्थ है कि इतना बड़ा जो सम्मान औरत को दिया गया है तो यह बिना किसी भी महत्त्वपूर्ण काम के नहीं दिया जा सकता है। इसलिए महिलाएं क़ौमें तैयार करने वाली होती हैं। इसलिए, हम चाहते हैं कि महिलाएं स्वतन्त्र रूप से बढ़ें और उन के कार्यों में पुरुष कोई हस्तक्षेप न हो ताकि वे अपना काम स्वतंत्र रूप से कर सकें।

* मेक्सिको से आने वाले एक पत्रकार ने सवाल करते हुए निवेदन किया कि जमाअत बहुत मानव सेवा के काम करती है विशेष रूप से मध्य और दक्षिण अमेरिका में। विशेष रूप से जमाअत ग्वाटेमाला में एक अस्पताल बना रही है जमाअत भविष्य में आगे कल्याण के कार्यक्रमों की क्या परियोजना रखती है? और आप इन क्षेत्रों में कब आएंगे? हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: हम तो बहुत छोटी सी जमाअत हैं। हमारे पास सीमित संसाधन हैं हमारे पास कोई तेल के संसाधन नहीं है जो भी हम करते हैं, वे लोगों की वित्तीय कुरबानी से करते हैं हम ग्वाटेमाला में जो अस्पतालों का निर्माण कर रहे हैं, उस में भी बहुत बड़ी धनराशि खर्च कर रहे हैं। जब हम ग्वाटेमाला में इस कार्यक्रम को पूरा करते हैं, तो हम दूसरे क्षेत्र में एक और परियोजना शुरू करेंगे। इस का आधार फण्ड की उपलब्धता पर है लेकिन हम लैटिन अमेरिका और अन्य अमेरिकी देशों में विकास के काम करते रहेंगे। जहां तक मेरी यात्रा का संबंध है, मुझे उम्मीद है कि जब आप इस अस्पताल को पूरा करेंगे, तो मैं यात्रा करूंगा।

घाना से डेली ग्राफिक न्यूज़पेपर्स के रिपोर्टर सिबास्टियन सिमे ने सवाल करते हुए कहा: आप हमेशा ग़लत मीडिया रिपोर्टिंग के बारे में अपनी चिंताओं को व्यक्त करते हैं। क्या आप ऐसी कोई मिसाल पेश कर सकते हैं जहां ग़लत रिपोर्टिंग की गई हो? उस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने कहा कि मैंने कहा था कि जब कोई मुसलमान कोई ग़लत काम करता है तो पूरे के पूरे पेज समाचार छाप देते हैं। और जो मुसलमान अच्छा काम कर रहे हैं, जो दुनिया में शांति स्थापित करने के लिए काम कर रहे हैं, उन्हें महत्त्व नहीं देते। यह मैंने कहा था। इस साल, छह लाख लोगों ने दुनिया में शांति स्थापित करने के लिए अहमदियत को स्वीकार किया है और वे सभी शांतिपूर्ण लोग हैं। लेकिन यह संदर्भ आपके समाचार पत्र में बहुत छोटी सी ख़बर आ जाती है। तो यह मैंने कहा था कि आपको हर स्थिति में न्याय करना है। जहां आप तस्वीर का पक्ष दिखा रहे हैं, वहाँ तस्वीर का दूसरा पक्ष भी दिखाएं जो कि इस्लाम की सच्ची शिक्षाओं का पक्ष है जो अहमदी मुसलमान दिखा रहे हैं।

यह संवाददाता सम्मेलन 1 बजकर 12 मिनट तक जारी रही।

मैक्सिकन वफद की हुज़ूर अनवर से मुलाकात

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपने कार्यालय पधारे जहां कार्यक्रम के अनुसार मेक्सिको से आने वाले प्रतिनिधिमंडल की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ से मुलाकात होई। मैक्सिको से इस साल 17 लोगों का प्रतिनिधिमंडल आया था जिस में पांच मैक्सिकन स्थानीय नए अहमदी भी शामिल थे

*वफद के सदस्यों ने कहा कि जलसा सालाना की पूरी व्यवस्था शांतिपूर्ण थी हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के ख़िताबों को सुनकर हम बहुत प्रभावित हुए हैं और हमने बहुत कुछ सीखा है। हमारी आध्यात्मिकता और ईमान में वृद्धि हुई है। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: आप भी इस तरह का बड़ा जलसा करें मैं भी वहां आऊंगा।

* मेक्सिको से एक नए अहमदी Miguel Olguin, साहिब भी जलसा में शामिल हुए। उन्होंने अपने विचारों को वर्णन करते हुए कहा कि: ख़ुदा तआला का विशेष इनाम है कि मुझे जलसा सालाना में भाग लेने का अवसर मिला। मैं बहुत भाग्यशाली हूं कि मुझे जलसा सालाना के दौरान हुज़ूर अनवर को देखने का अवसर मिला। मैंने हमेशा सुना है कि मुसलमान अतिवादी होते हैं, लेकिन मैंने जब से इस्लाम स्वीकार किया है कभी कोई इस प्रकार की बात नहीं देखी। यहां भी मैंने हज़ारों लोगों को देखा है जो यह साबित करते हैं कि जमाअत का अतिवाद से संबंध नहीं है। जलसा का प्रबंधन भी बहुत अच्छा था। छोटे बच्चों को पीने पिलाते हुए देखा। जमाअत अहमदिया का का यह तरीका बहुत उत्कृष्ट है कि कम उम्र से ही समाज सेवा की आदत डाली जाती है ताकि आदत भी बन जाए और सेवा के बदला में अल्लाह तआला से सवाब भी मिल जाए। जलसा सालाना के अवसर पर विभिन्न देशों के कई लोगों से मुलाकात हुई जिन का सम्बन्ध विभिन्न देशों से था और अलग-अलग भाषाएं बोलते थे। मैंने अंदाज़ा लगाया कि एक दूसरे के साथ मुहब्बत और श्रद्धा का व्यवहार दिखाने का लिए एक भाषा का आना आवश्यक नहीं है।

* मैक्सिको के एक नए अहमदी हीराम विदाल साहिब कहते हैं कि: मुझे पहली बार जलसा सालाना में भाग लेने का अवसर मिला है। मैं यह भी कल्पना भी नहीं कर सकता कि हुज़ूर अनवर को देखने का अवसर मिलेगा इस प्रकार लग रहा था कि कोई सपना देख रहा हूं।

* रोसलीना लारा फ्लोटा सहिया, एक अन्य नई मैक्सिकन अहमदी महिला ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा: जलसा सालाना मेरे लिए एक रूहानी परिवर्तन का कारण था। आलमी बैअत के दौरान मुझे लगा कि हर शब्द दुहराते हुए, ख़ुदा तआला से दोबारा बैअत पर अनुकरण करने का वादा किया है। और बैअत के माध्यम से मेरे ईमान को बहुत मज़बूती मिली। मुझे गर्व है कि मैं जमाअत अहमदिया का हिस्सा हूं और यह जमाअत सारी दुनिया की बेहतरी के लिए शिक्षा प्रस्तुत करती है और विभिन्न तरीकों से मानवता की मदद करती है। मुझे जलसा के दौरान इस्लाम और जमाअत के बारे में कई चीज़ें सीखने को मिलीं।

* मैक्सिकन नई अहमदी एयरम मार्टिनेज साहिबा ने कहा: हमारे आवास का प्रबन्ध जामिया में किया गया था। भाषा को न समझने के बावजूद, सभी स्वयंसेवकों ने हमारे साथ बहुत अच्छा व्यवहार किया। मुझे दुनिया के कई देशों के लोगों से मिलने का अवसर मिला है, मैं यह भी कल्पना नहीं कर सकती कि इतने देशों के प्रतिनिधि होंगे। इसी प्रकार, हुज़ूर अनवर के सभी ख़िताबों को सुनने का अवसर मिला। सबसे प्रभावशाली ख़िताब वह था जिसमें हुज़ूर अनवर ने बच्चों की शिक्षा और प्रशिक्षण पर ध्यान दिलाय था। विशेष रूप से, हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह ने एक डाकू का अपनी मां की जीभ काट लेने की जो घटना सुनाई उस ने मेरे दिल पर बहुत प्रभाव किया।

*एक नई बैअत करने वाली महिला Heidi Maribel Gamboa साहिबा ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा: जलसा सालाना के दिन मेरे जीवन के कई महत्त्वपूर्ण दिन थे जिसके दौरान मुझे जमाअत के विभिन्न लोगों से मिलने का मौका मिला, जिनका संबंध विभिन्न देशों से था। विभिन्न देशों से आने वाले ये मेहमान मुझसे इस प्रकार मिले जिस तरह हम एक ही परिवार के हैं। शायद मैं उन्हें फिर कभी नहीं पा सकती, लेकिन इस जलसा की यादें हमेशा हमेशा के लिए रहेंगी।

मैक्सिकन वफद की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ से यह मुलाकात 1 बजकर 25 मिन्ट तक जारी रही। अन्त में अंत में प्रतिनिधिमंडल के सदस्यों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के साथ तस्वीर बनवाने का श्रेय पाया।

तुर्कमेनिस्तान के वफद की हुज़ूर अनवर से मुलाकात

इस के बाद तुर्कमेनिस्तान से आने वाले प्रतिनिधिमंडल ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के साथ मुलाकात का श्रेय पाया। तुर्कमेनिस्तान से दो लोगों का वफद जलसा, यूके में शामिल हुआ। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के पूछने पर इन मेहमानों ने निवेदन किया कि हमारी बहुत अच्छी भावनाएं हैं। जिस सच्चाई की हमें तलाश थी वह यहाँ आ कर मिली है। मैं एक लेखक हूं। तीस साल तक अख़बार निकाला है। 16 पुस्तकें भी लिखी हैं।

अन्य मेहमान कहने लगे। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ का चेहरा देख कर तबीयत इतना खुश होती है कि वर्णन नहीं कर सकता। मैंने आलमी बैअत वाले दिन बैअत की है। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: जो प्रबन्ध आपने यहां देखा है? इस प्रकार का आप को और कहीं भी नहीं दिखाई देगा। महोदय ने कहा, बहुत अच्छी व्यवस्था थी जितने लोग मिले हैं, मुहब्बत करने वाले और प्यार करने वाले थे।

*तुर्कमेनिस्तान से आने वाले एक दोस्त "अब्दुर्रशीद" साहिब ने अपने भाव का प्रकट करते हुए कहा: मैं लगभग दो साल पहले अपने एक दोस्त से इस प्यारी जमाअत के बारे में सुना था जिसका नारा मुहब्बत सब के लिए नफरत किसी से नहीं था। जिस दिन से लंदन आया हूँ, स्नेह और प्यार से घिरा हुआ हूँ जैसे कि अपने वास्तविक माता-पिता और परिजनों के बीच हूं। जिन बातों ने मुझे बहुत प्रभावित किया और मेरे दिल पर गहरा असर छोड़ा है उनमें से एक तो यह है कि जिस दिन हम तुर्कमेनिस्तान से लंदन में पहुंचे, हमें हवाई अड्डे से होटल ले जाया गया। जब हम वहां पहुंचे तो ड्यूटी पर निर्धारित अहमदी लड़कों ने सलाम करने के बाद त्वरित कहा कि आप लोग यात्रा कर के आए हैं, आप को भूख लगी होगी इसलिए आप पहले खाना खा लें और फिर आराम करें। ये बात सुनकर मुझे रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वह हदीस याद आ गई जब एक बार आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मजलिस में एक मेहमान आया तो चूंकि आप के घर में मेहमान को प्रस्तुत करने के लिए कुछ नहीं था तो आप ने अपने सहाबा से पूछा कि उनमें से कौन है जो इस मेहमान को ले जाकर उसका आतिथ्य कर सकता हैं? तो एक सहाबी उन्हें अपने साथ ले गया। जबकि उनके अपने घर में भी केवल इतना ही खाना था कि वह अपने परिजनों को मुश्किल से खिला सके। उन्होंने अपने बच्चों को किसी तरह बहला फुसला कर भूखे ही सुला दिया और मेहमान को भोजन प्रदान कर दिया, जबकि खुद चिराग़ बुझाकर कुछ ऐसी हरकतें शुरू कर दीं कि मेहमान समझे कि यह दोनों पति पत्नी भी खाना चुके हैं और यह नज़ारा अल्लाह तआला ने कश्फी रूप से रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को भी दिखा दिया। मुझे तो यह हदीस याद आ गई और मैंने महसूस किया कि यह जमाअत अहमदिया के आदमी वास्तविक इस्लामी शिक्षा का पालन करने वाले और उसके अनुयायी हैं।

फिर उसके बाद जामिया अहमदिया में मैंने जब हुज़ूर अनवर की बड़ी तस्वीर देखी तो मुझे तभी विश्वास हो गया कि हुज़ूर अनवर एक ऐसी व्यक्ति हैं जिनका चेहरा अल्लाह तआला ने नूर से मुनव्वर और प्रकाशित किया है। अल्लाह तआला की कृपा से जब हुज़ूर जामिया आए तो विशेष रूप से मेरे पास आए। मुझे एहसास हुआ कि ये मेरे जीवन का सबसे महत्त्वपूर्ण क्षण हैं। जब पहली बार हुज़ूर की नज़र मुझ पर पड़ी तो मेरे शरीर पर बहुत अधिक कपकपी छा गई। हुज़ूर कुछ आगे जाकर वापस आए और मेरे साथ हाथ मिलाया तो उसके बाद मेरे शरीर में एक जोश और गर्मी की लहर दौड़ गई और मुझे लगा जैसे मेरा बुखार अच्छा हो गया है लेकिन कुछ समय बाद मुझे एहसास हुआ कि यह बुखार नहीं था, मैं बिल्कुल ठीक हूं। असल में यह शक्ति और जोश था जो कि मेरे शरीर में हुज़ूर के साथ हाथ मिलाने के बाद आ गई थी। यह स्थिति अगली सुबह तक अनुभव करता रहा। मैंने अपने पूरे जीवन में पहले कभी ऐसी बात महसूस नहीं थी। जलसा सालाना में शामिल होकर मुझे यह बात समझ आ गई है कि मैंने अपने सारे जीवन में अल्लाह तआला की तलाश में गुज़ारी परन्तु अल्लाह तआला को सिर्फ यहां आकर ही पाया। मुझे अल्लाह तआला की कृपा से आलमी बैअत के भव्य समारोह में शामिल होकर बैअत करने की तौफ़ीक़ मिली। जिस समय बैअत कर रहा था मेरी आंखों से आंसू जारी थे और वे आँसू हैं जो मेरे पिता की मृत्यु पर भी न निकल पाए। यह आंसू ज़ाहिरी तौर पर कोई कारण नहीं था लेकिन इस के बाद मुझे एहसास हुआ कि अब धरती पर एसी आशा पैदा हो गई है और लाखों लोगों की एक ऐसी जमाअत पैदा हो गई है जो अपनी हस्ती में बेनज़ीर है और यह जमाअत अपने प्रत्येक कर्म से और प्रत्येक मुश्किल और आपदा को दुनिया से दूर करने के लिए हर कुर्बानी देने को तैयार है।

*हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया कुछ चरमपंथी और अतिवादी समूहों के कुकर्मों की वजह से सब की बदनामी हो रही है। हमें इस बात की कोशिश करनी चाहिए कि इस्लाम की वास्तविक और सच्ची शिक्षा दुनिया तक पहुंचाएं और दुआ भी करें। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने कहा: अब आप वापस जाकर अपने मित्रों में अहमदियत का संदेश पहुंचाऐं। अल्लाह तआला आप को इस की तौफीक दे।

तुर्कमेनिस्तान के प्रतिनिधिमंडल की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ से यह मुलाकात 1 बजकर 40 मिनट तक चली। अंत में प्रतिनिधिमंडल के सदस्यों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के साथ तस्वीर बनवाने की सआदत पाई।

कज़ाकिस्तान के वफद की हुज़ूर अनवर से मुलाकात

उसके बाद काज़किस्तान से आने वाले प्रतिनिधिमंडल के सदस्यों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के साथ मुलाकात की सआदत पाई।

कजाकिस्तान से इस साल छह लोगों का प्रतिनिधिमंडल था। प्रतिनिधिमंडल के सदस्यों ने जलसा सालाना की व्यवस्था को लेकर प्रशंसा के शब्द कहे कि सारी व्यवस्था बहुत अच्छी थी और प्रभावित करने वाले थे। बारिश के बावजूद व्यवस्था में कोई रुकावट नहीं थी।

*वफद के एक सदस्य ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ से पूछा की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ की सेवा में जब होने वाले बच्चे का नाम रखने का अनुरोध किया जाता है तो कभी-कभी हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ केवल एक नाम देते हैं और उसी के अनुसार बच्चा का जन्म होता है यह किस प्रकार होता है इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: यह सब कुछ ख़ुदा तआला करवा रहा होता है। आम तौर पर मैं दो नाम देता हूं। कभी-कभी मैं एक ही नाम देता हूं, लेकिन यह सब ख़ुदा की तरफ से होता है।

कज़ाकिस्तान से एक अहमदी दोस्त अमरो असकर साहिब भी प्रतिनिधिमंडल में मौजूद थे। उन्होंने अपने विचार व्यक्त करते हुए लिखा: जलसा बहुत अच्छे तरीके से पूरा हुआ है और मेरे ईमान को मजबूत कर गया। मैं यह महसूस करता हूँ कि हर आने वाला जलसा मेरे ऊपर एक नए तरीके से असर करता है। मैं समझता हूं कि सांसारिक

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
The Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2017-2019 Vol. 3 Thursday 24 May 2018 Issue No.21

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

खुशियां तो समय के साथ फीकी पड़ जाती हैं लेकिन आध्यात्मिकता से प्राप्त की जाने वाली खुशियां जितनी बार भी उपलब्ध हों हर बार एक नया रास्ता खोलती हैं जिसके बारे में इंसान ने कभी सोचा नहीं होता।

* एक मेहमान बोगो बायो दावरन साहिब ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा: जलसा सालाना के प्रबंधन ने मुझे बहुत प्रभावित किया है। वह जगह जहां हमारा आवास था, वह बहुत सुन्दर थी। जलवायु ताज़ा और सुखद थी। स्वयं सेवक बहुत बुद्धिमान थे, विभिन्न प्रकार के खाद्य पदार्थ फल प्रबंधन और समय की पाबन्दी के व्यवस्था की गई ट्रांसपोर्ट का प्रबन्ध था। जहां भी हम गए, हमारे लिए एक मार्की लगी होती थी जहां हमेशा भोजन का प्रबन्ध रहता था।

इसी तरह जलसा सालाना में लगाई गईं विभिन्न प्रदर्शनियां भी मुझे बहुत पसंद आईं। जलसा सालाना प्रेम और सहिष्णुता का एक ऐसा नमूना है जो दुनिया के सभी अन्य संगठनों के लिए उच्च उदाहरण रखता है। इसके अलावा, सबसे अधिक लाभदायक और हिदायत मुझे जलसा के तीन दिन शामिल हो कर मिली है। इसके अलावा, मेरे जीवन में सबसे बड़ा परिवर्तन यह है कि मैंने ख़लीफतुल मसीह के हाथ पर बैअत की तौफीक़ पाई। मुझे इस प्रकार लग रहा है कि मैं अभी तक अपनी हालत का सहीह तरीके से समझ नहीं सका क्योंकि अब तक मैं एक अस्वीकार्य अवस्था से गुज़र रहा हूं। मैं हुज़ूर अनवर की सेवा में दुआ का निवेदन करता हूं कि अल्लाह तआला मेरी बैअत को स्वीकार करे और मुझे बरकत से नवाज़े।

* वफद के सदस्यों में राष्ट्रपति मजलिस ख़ुद्दामुल अहमदिया कज़ाकिस्तान, अमीर सफीअलीन साहिब भी शामिल थे। सदर ने अपने विचार प्रकट करते हुए कहा कि: इस जलसा ने मुझ पर कई निशान छोड़े हैं मानो कि इस ने मेरे दिल को ख़ुशी से भर दिया है। जलसा में के सब काम ने मेरे लिए अहमदियत की सच्चाई की गवाही छोड़ी है। इस की प्रमाण मैंने प्रत्येक विभाग में देखा है।

ब्रिटेन में मुझे अहमदियत का प्रचार के टेलीविज़न और रेडियो के माध्यम ने भी बहुत प्रभावित किया। मेरे विचार में रेडियो सब अधिक उपयोग किया है क्योंकि जब हम जामिया से जलसा के लिए जाते थे तो बस में भी रेडियो सुनते थे इसके अलावा लंदन में भी बस मैं रेडियो सुना और यह मेरे लिए बहुत ही सुखद था कि जमाअत कैसे तब्लीग़ कर रही है। तो क्या यह जमाअत अहमदिया की सच्चाई का निशान नहीं है?

यदि हम जलसा के आयोजन पर नज़र दौड़ाएं तो सभी क्षेत्रों जैसे परिवहन, खाना बनाना और खिलाना, रक्षा, जनसंपर्क, स्वागत आदि सभी क्षेत्र बहुत ही अच्छे तरीके से अपना-अपना काम कर रहे थे जिसकी वजह से कोई समस्या और बाधा नहीं आ रही थी। ये सभी कार्य इस उच्च प्रबंधन के साथ चल रहे थे कि इस दुनिया में कोई उदाहरण नहीं है। तो क्या यह जमाअत अहमदिया की सच्चाई का संकेत नहीं है?

इसी तरह मुझे समारोह वितरण शैक्षिक प्रमाणपत्र पुरस्कार ने भी बहुत प्रभावित किया। विशेष रूप इसलिए कि समय के ख़लीफा अपने मुबारक हाथों से प्रमाण पत्र देते हैं ताकि जमाअत के लोगों में शिक्षा और विज्ञान, अनुसंधान के क्षेत्र में आगे बढ़ने की प्रवृत्ति पैदा हो। क्या कोई भी इस्लामी संगठन है जो इस तरह शिक्षा के लिए प्रोत्साहित करता हो? जहां तक मैं जानता हूं आइ.एस अपने अनुयायियों को दुनियावी तालीम से पूरी तरह से मना करती है। तो क्या यह जमाअत अहमदिया की सच्चाई का संकेत नहीं है?

इसी तरह मुझे जलसा के दौरान आयोजित प्रदर्शनियों ने भी बहुत प्रभावित किया है। हर एक प्रदर्शनी एक अलग विषय पर थी। लेकिन सबसे व्यापक प्रदर्शन प्रकाशन विभाग का था। इंग्लिश भाषा में कई पुस्तकें थीं। इस तरह की पुस्तकें थीं जो मेरी मातृ भाषा रूसी में अब नहीं हैं। मैंने देखा कि कितना व्यापक काम है किताबें, लीफ लेट आदि अनुवाद और प्रकाशन करना। कुरआन मजीद के प्रकाशन का काम इतना व्यापक है कि जिस में पूरी दुनिया से लोग अनुवाद और छपवाने के काम में भाग लेते हैं।

इसी तरह ह्यूमेन्टी फर्सट का काम भी पूरी दुनिया में बहुत व्यापक हो रहा है। इसी तरह MTA प्रसारण, रिकॉर्डिंग, कार्यक्रम आदि भी अपनी विशालता को छू रहे हैं और इसमें भी कई लोग काम करते हैं। तो क्या यह जमाअत अहमदिया की सच्चाई का संकेत नहीं है?

इसी तरह मुझे मजलिस ख़ुद्दामुल अहमदिया की मीटिंग भी बहुत पसंद आई, जिसमें सौ से अधिक देशों के प्रतिनिधि शामिल हुए और जिन्होंने अपनी-अपनी रिपोर्ट कारगुज़ारी प्रस्तुत कीं। उन में से कुछ ने बताया कि उनके देश में कल्याणकारी कार्य हुए। उदाहरण के लिए, रक्त दान, अनाथालय, विभिन्न फाउंडेशन के लिए पैसे जमा करना,वकारे अमल इत्यादि। यह काम इन देशों में भी होते हैं जहां जमाअत का बहुत विरोध होता इसी तरह रिपोर्ट में बताया गया कि वहाँ स्पोर्ट्स रैली, और विभिन्न खेलें होती हैं, जिन में ख़ुद्दाम को व्यर्थ समय बिताने के बजाय खेलने का मौका मिल जाता है। तो क्या ये सब सच्चाई का प्रतीक नहीं है?

मीटिंग के दौरान मैंने सभी तकरीरों को सुना था। लेकिन मैं विशेष रूप से निम्नलिखित विषयों ने बहुत प्रभावित किया: वास्तविक इस्लामी जिहाद, इस भाषण में कलम के जिहाद का महत्त्व, आत्मघाती हमलों और मासूमों की हत्या के बजाय बातचीत के महत्त्व को समझाया गया। इसी तरह मौजूदा दौर में इस्लाम का प्रमुख योगदान, किशोरों के आपस के संबंधों, सामाजिक मुद्दों, इंटरनेट की समस्याओं, वर्तमान समाज के रुझान, सोशल मीडिया का युवा पीढ़ी पर प्रभाव, आधुनिक पीढ़ी का प्रशिक्षण, अश्लीलता, बेहूदा दृश्यों के बुरे परिणाम आदि विषय इत्यादि। अर्थात कि मुझे यहां वह इस्लाम मिला जो कि मौजूदा दौर के सभी मुद्दों और रुझान का जवाब देता है न कि वह इस्लाम जो प्राचीन काल की कहानियों पर आधारित हो। जैसा कि दूसरे सभी फिर्के केवल किस्से कहानियों तक ही सीमित हैं। इसी तरह हुज़ूर अनवर के शब्दों ने बहुत प्रभावित किया जिस में आपने फरमाया था कि इस्लाम सभी धर्मों को सच्चा मानता है और सभी पिछले रसूल को मानना और उनका सम्मान के लिए सिखाता है। तो क्या यह सब सत्य का प्रतीक नहीं है?

आलमी बैअत ने मुझे बहुत प्रभावित किया। मेरे पास ऐसे शब्द नहीं हैं जो मैं उस अवस्था को वर्णन करूं। मेरा दिल कांप रहा था और आँखों के आँसू थे। मैं अपनी लाइन में सबसे अंत पर था और मेरे आगे लगभग तीन सौ आदमी थे, इस तरह कुल शायद दस पंक्तियाँ थीं। मीरे आगे "जूना थन साहिब" स्थानीय अंग्रेज़ थे। हम पहले से ही एक दूसरे को जानते थे। मुझे इस मामले ने आगे किया कि स्थानीय अंग्रेज़ी भी इस्लाम में प्रवेश कर रहे हैं। तो क्या यह सच्चाई का संकेत नहीं है?

इसी तरह मुझे मेहमानों के भाषणों भी बहुत पसंद आए जिनमें से कुछ ने सीधे मंच से दर्शकों को संबोधित किया और कुछ ने अपने वीडियो संदेश भेजे थे। सब वक्ताओं का एक ही नारा था। "मुहब्बत सब के लिए, नफरत किसी से नहीं" पहले मैं सोचता था कि व्यक्तिगत प्यार अभिप्राय है और सोचता था कि किस प्रकार मुहब्बत हो सकती है ऐसे लोगों से जो बुरे कामों में जुड़े होते हैं। लेकिन अब मुझे यह समझा आई है कि इस से अभिप्राय समाज से प्यार करना है। अगर हम समाज से प्यार करें तो समाज सुधार की दिशा में बदल सकता है और इस समय केवल अहमदियों की शिक्षा है जो यह कर सकती है। अहमदियत शान्ति, न्याय, अल्पसंख्यकों के अधिकार, और सारी मानवता के सम्मान के बारे में भी सिखाती है, यहां तक कि "मुहब्बत सब के लिए नफरत किसी से नहीं" की शिक्षा देती है। वास्तव में यह एक महान नारा है और यह नारा भी अहमदियत की सच्चाई की दलील है।

संक्षेप में जलसा के समय में प्रत्येक क्षण प्रत्येक घटना प्रत्येक मोड़ मेरे लिए अहमदियत की सच्चाई का निशान था। बार बार मैं इस विश्वास में पक्का होता गया। मैं अपने सभी भाइयों को नसीहत करता हूं कि वह इस जलसा में ज़रूर शामिल हों। ताकि इस जलसा की रूह को स्वयं महसूस कर सकें।

जलसा के अंत में कुछ लोग हदीकतुल महदी में इधर उधर फिरने लगे, कुछ खड़े बातें करने लगे, कुछ ख़ुश नज़र आ रहे थे मानो सब एक दूसरे से गले मिल रहे थे और सहयोग और एकता, भाईचारा की एक व्यावहारिक छवि पेश कर रहे थे। उस समय मैंने जन्नत की नज़ारा अनुभव किया।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने सदर मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया से फरमाया कि अब आप पूरी तरह से चार्ज होकर जा रहे हैं। अपने कर्तव्यों को पूरा पूरा अदा करें।

काज़ाकिस्तान के वफद की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ से यह मुलाकात 1 बज कर 50 मिन्ट तक जारी रही। अन्त में मेम्बरों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के साथ तस्वीर बनाने का अवसर प्राप्त किया। (शेष.................)

☆ ☆ ☆

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad